दो० हरिमाया अतिशय प्रबल पाय सकै को पार।
जाके बश नट प्लवँग इव नाचत सब संसार॥
फँस्यो न मोहम जनक मति व्यापि न बिषै बयारि।
यह सिय राम सनेहको प्रबल प्रताप बिचारि॥

जनक सवैया॥ पुत्रि पवित्र किये कुल दोउ इतै निमिराज उतै रघुकोरी। त्यों भगवन्त सुखाकरखो यश जाहिर उज्वल तव चहुँ-ओरी॥ जीति लिये सरि देवनकी यह कीरति रूप सुता सरि तेरी। प्रापति है सब लोकन में करि भेदन सो बिधि अण्ड करोरी॥

दो० गंगाजीके अवनि पै तीनि बड़े थल आहिं।
हरद्वार अरु प्रागपुनि गंगासागर माहिं॥
सुरसरिरूप कीर्त्ति तव बिपुल बड़े थल भ्राज।
भाग्यवंत सब लोक में जहँ जहँ सन्त समाज॥
सुनिपितुबचन सु सत्यशुचि सियसकुचीमनमाहिं।
कहि न सकतमनगुनतनिशि बसबइहांभलनाहिं॥
लखि रुख नृप रानी सियहि बार बार उरलाय।
बिदाकीन सनमानि अति चलीथलहि शिरनाय॥

सीय मातु तब अवसर पाई। नृपसन कह्यो भरत गतिगाई॥
कौशल्या जसि भरत बड़ाई। कीन पतिहि सोसकल सुनाई॥
सुनि मिथिलाधिप भरत प्रभावा। पुलक शरीर नैन जल छावा॥
सुनहु प्रिया तव सत्य सुबानी। भरत प्रभाव न परत बखानी॥
मैं अनुमान कीन बहु भाँती। भरत सुभाव शील गुणपाँती॥
जानि न जाहिंअमित अवगाहा। विथकित बुद्धि लहै नहिंथाहा॥
शारद शेष अगम शिव भेदै। जानि को सकै अपर उन भेदै॥
भरत चरित बरणत सुनु रानी। बिनुश्रमलहहिं परमपदप्रानी॥

धन्य धन्य तिनकर बड़ भागा । जिन्हके भरतचरण अनुरागा ॥
भरत भक्त मन बच अरु करणी । भक्त प्रभाव अमित बर बरणी ॥

दो० भरत जाहिं बन फिरहिं गृह लषण भली यहबात ।
पै रघुबर अरु भरतकी प्रीति जानि नहिं जात ॥
जो आयसु रघुपति करब मेटिहहिं भरत न ताहि ।
ताते शोच सनेह वश करिय न प्रिय मन माँहि ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे जनकसुनैनासम्बादे भरतगुणवर्णनोनामद्वादशोऽध्याय॰ १२ ॥

दो० ररु ररु रामैं रामरे मार मोर मैं मारि ।
रमु रमु रामैं राम मैं रोमैं रोम मुरारि ॥
यहि विधि जनक सुनैनिका भरत रामगुण व्रात ।
सहित प्रीति वर्णनकरत बिगत निशाभइ प्रात ॥
तब सबहिन मज्जन किये पूजे जो ज्यहि इष्ट ।
गे नहाय रघुबीर तहँ मज्जत जहाँ बशिष्ट ॥

रामछप्पै ॥ नाथ सकलपुर लोग भरत सानुज महतारी । व्याकुल शोक सनेह बिपुल बन माहिं दुखारी ॥ लीन्हे सकल समाज साज सँग जनक नरेशू । भये बहुत दिन रहत सहत बन माहिं कलेशू ॥ मुनि नाथ परमहित सबहिं कर साथ हाथ रौरवहि अहै । भगवन्त उचित जस होय कछु करिय स्वई सब शिरसहै ॥ बशिष्ठ चकोरछंद॥ नरक समान सबै सुखसाज द्विराज समाज तुम्हैं बिनु राम । सो सुखकर्म सुधर्म्म सबै जरिजाउ सुभाउ जहाँ नहिंराम ॥ योग कुयोग सु ज्ञान अज्ञान वृथा जहि प्रेम प्रधाननराम । त्यों भगवन्त सदा छग ताहि न प्राण प्रिया ज्यहि हैं सियराम ॥

दो० तुम बिनु संतत सहतदुख लहत सुखहि तुमपाय ।

जानतहौ गति सबहिकी ज्यहि जसभाय कुभाय ॥

तोटकछंद॥ तब आयसु राम सबै शिरहै। तुमपै सबकी गति जाहिरहै॥ अब आश्रम जाइ अराम खुदै। करिहौं रुचि राउरि मैं समुदै॥

दो० करि प्रणाम निज आश्रमहिं गये जबहिं रघुनाथ।
तब धरिधीर बिदेह पै आवत भे मुनि नाथ॥

बशिष्ठ तोमरछंद॥ मिथिलेशजी महराज। करिये स्वई अब काज॥ ज्यहि धर्मसा सबकेर। सब भाँति हो हिंत ढेर॥

दो० मुनि बशिष्ठके बचन इमि सुनि बिदेह महराज।
करि बिचार मन भरत पहँ आये सहित समाज॥

जनक दोहा॥

तात भरत तुम रामकर जानहु शील सुभाय।
ताते जो आयसु करहु कीजिय स्वई उपाय॥

भरत सवैया॥ सब भाँति महीप बड़े सु हितू गुरु मातु पिता सम आपु अहौ। गुणज्ञान निधान सुजान महा पुनि कौशिक आदि मुनीशजहौ॥ भगवन्त सुयोंथल बूझब मोहिं न शोभित आपु बिचारि कहौ। शिशु सेवक जानिजु आयसु मोहिं करौ स्वइ सादर शीशलहौं॥ तोटकछंद॥ श्रुति शास्त्र पुराण पुकारिकहैं। अति सेवक धर्म कठोर अहैं॥ प्रभु धर्महिं स्वार्थ बिरोध महा। रत बैरहि प्रेम प्रबोध कहा॥

सो० पराधीन स्वहिं जानि पालिराम रुख धर्म ब्रत।
करहु प्रेम पहिंचानि सबकर हित सम्मत सबहि॥
सुनत भरत के बैन सहित सभा मिथिलाधिपति।
पुलकगात जल नैन लगे सराहन भरत कहँ॥

पुनि मुनि भूपति भरत समेता। सचिवसाधु द्विजसकलसचेता॥

गये जहां राजत रघुबीरा । बट तरुतर बर छाँह गँभीरा ॥
सुरन हृदय भय भा अधिकाई । सुमिरि शारदहिं तुरत बुलाई ॥
कहेनि भरत मतिफेरहु माता । करिछलहोहु बिबुध कुलत्राता ॥
सुनि कहदेवि शक्ति म्वहिंनाहीं । सकउँ प्रवेशि भरत मतिमाहीं ॥
भरत हृदय निवसत रघुराया । तहँ नहिं चलिहि सुरहु छलमाया ॥
यहि बिधि सुरन सीख बहुदैली । बिधिलोकहिं शारद तब गैली ॥
सुर उपाय नहिं चले खरोसे । रहे शोचि मन भरत भरोसे ॥
राम सबहिं बहुबिधि सनमानी । आसन दीन सबै समजानी ॥
निरखि राम सिय अद्भुत शोभा । भये प्रेमबश सब मन लोभा ॥

वशिष्ठ दोहा ॥

हे रघुबर कुलच्युमणि मणि सत्यसंध सुखगेहु ।
मत हमार याही सकल करैं जो आयसु देहु ॥

राम सवैया ॥ बिद्य सुमानसभा ज्यहि मैंमुनिराजसु आपु अहो मिथिलेशू । तामधि मैं शिशु सेवक नाथकहों सु कहा सब भांति भदेशू ॥ ज्ञान निधान सुजान मुनीश महीपति आपु जु देहु नि-देशू । सोइकरौं भगवन्त अबै न डरौं पुनि आयसु भंग नरेशू ॥
सुनि प्रभु बचन सरल सुखसाने । मुनि मिथिलेश मनहिं सकुचाने ॥
उतर न आव बिकल भयभारी । रहेभरत मुख सकल निहारी ॥

दो॰ जानि कुअवसर भरत तब हृदय सनेह सँभारि ।
बिंध्याचल गिरिबढ़त जिमि लीन्ह्यउ घटजनिवारि ॥

बिंध्या मुनि कर शिष्य सुभागा । एक समय सो बाढ़न लागा ॥
मुनि अवलोकि कीनअनुमाना । लेइहिढांकि अवशि यहभाना ॥
अस बिचारि तहँ गे मुनिनाथा । कीनप्रणाम सो धरिमहिमाथा ॥
दै अशीश अस कह मुनिराऊ । जब तक मैं न अत्र पुनिआऊ ॥

तब तक परे रहो तुम ऐसे। आजु लगे सो पौढ़ा वैसे॥
तैसेहि राम प्रताप तमारी। अवरोधक निज नेह बिचारी॥
बढ़त खैंचि उर अन्तर माहीं। राखेउ गुप्त प्रगट सो नाहीं॥

दो० जैसे पृथिवी कनकदृग हरिलै गयो चुराय।
है बराह अज नासिका बधि तेहि थप्यो धराय॥
शोक रूप हिरण्याक्ष त्यों गोये सुमति धराह।
उत्पति है बिधि भरत ते तुरत विवेक बराह॥
मारि कनक दृग शोक मै मति महि तुरतउधारि।
करि प्रणाम सिय राम पद बोले भरत बिचारि॥

भरत रोलाछंद॥ नाथ मातु पितु स्वामि सुहृद गुरु पूज्य हमारे। सबप्रकार तुम राम प्रणतपालक हितकारे॥ मैं बश मोह अबूझ मेटि प्रभुकै बरबानी। आयउँ सहित समाज इहां अति ढीठहि ठानी॥ सोकृपाल नहिं कोह तनक मनमें निज कीन्हा। साधुसभा महँ नाथ मोहिं आदर अति दीन्हा॥ साउरि रीति सु ऐसि विदित जग वेद बखानै। को कृपालु बिनु आपु दास जियकी रुचिजानै॥ क्षमि सब गुनह हमार नाथ अब आयसु करहू। बहुत कहौं प्रभु काहस्वई शिर सादर धरहू॥ सवैया॥ प्रभु पंकज पायँन सौंह किये रुचि जागत सोवत की सुकहौं। फलचारि बिहाय सु छांड़ि छलै मनमें कछु काम न आनचहौं॥ बसुयाम सुस्वामि पदाब्जन की करि सेव सनेह म मग्नरहौं। भगवन्त जु आयसु नाथकरौ स्वइ सादर मैं निज शीशलहौं॥

दो० असकहि भरत सप्रेमउठि परेधाय प्रभुपाय।
समय सनेह अपारसो कहि न जाय सुखगाय॥

गीतिका छंद॥ श्रीराम सुनि शुचि भरत की बर बिनय सुख

पूरणहिये। सनमानि प्रभुं गहिपाणि ढिग बैठाय अति आदरलिये ॥ रघुराज साधु समाजनृप मुनिराज लखि आनँदभिये। लागे सराहन भरत रघुवर भक्ति भल भायप प्रिये ॥

राम भरतकै प्रीति निहारी। सुरपति डरि उचाट शिरडारी ॥
भरत जनक मंत्री मुनिराजा। औरहु साधु सचेत समाजा ॥
इनहि बिहाइ लागि सबकेरे। बिकल लोग सुरमाया प्रेरे ॥
मन न शांति क्षण बनक्षण घरमा। रुचिन कहत कउ काहुहि मरमा॥
यकटक चितवहिं सब सुरत्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता॥
भरत प्रभाउ सकै को गाई। कहत शेष शारद सकुचाई ॥

कबित्त ॥ प्रीतिनय बिनय प्रतीति प्यारु भायपन पावत न पार शेष औरन कि गायना। जाकी बरभक्ति लवलेशहू बिलोकि आपु मगन विदेह भयो प्रेमही समायना॥ भाग्यवंत गावत सुनत सत्यभाव जासु राम सीयपायँ रति काके सरसायना। कीन्ह्यो अनुमान तिहुँलोकनमें अनिमन भयो है न होन कहुँ भारत सो भायना॥ तोटकछन्द॥गति देखि सुऐसि सबै जनकी। प्रभुजान सुजानि गये मन की॥ शुभ धर्मधुरीन सुधीर ह्वदै। सतिसन्ध कृपाल सुशील सदै ॥

दो० समय समान सुबानि मृदु सुनत श्रवण सुखदाय।
भरतहि निरखि सप्रेम तब बोले श्रीरघुराय ॥
जानत तुम सबविधि अहो तात तरणि कुलरीति।
आपन मोर बिचारि भल काहु कहै जसनीति ॥
तात भरत भूपति विना बात हमारी भ्रष्ट।
रही यथा प्रथमै रही केवल कृपा वशिष्ठ॥
नतरु प्रजा परिवार प्रिय मोहिं सहित पुरलोग।
सहत्यो विषम विषाद सब लखि नृपमरण अयोग॥

हम तुमरक्षक दिशिद्धऊ है प्रसाद गुरुदेव।
ताते निधरक हूजिये मानि तात मत येव॥

सवैया॥ य्वहिं आयसु तात किये बनको दिय राजसमाज तुम्हे सुसबै। स्वइ कीजिय आज़ु हमौ तुमहूं हित मानिरहै कुलधर्म तबै॥ जग जीवनलाहु लह्यो भलसो करते पितुआयसु जो न दबै। ज्यहि खण्डितहोइ न तातगिरा स्वइ तातकिये तव मोहिं फबै॥

सुनि प्रभुवचन नाइ पदमाथा। बोले भरत जोरि युगहाथा॥
उतरदेउँ प्रभु करौं ढिठाई। क्षमब जानि सेवक लघुभाई॥
पितु आयसु पालिय सुखमानी। परम धर्म यह वेद बखानी॥
पै पितुहोइ नारि बश जोई। सन्निपात अरु बातुल होई॥
सेवत मदहि कुपथ नितत्रालै। ऐसे पितुकर वचन न पालै॥
समुझि उचित कीजै भगवाना। तुम सर्वज्ञ कृपाल सुजाना॥
भरतसुजान रामरुख जाना। मन्दाकिनी तीर प्रणठाना॥

दो० लैकर जल संकल्पपढ़ि जो नहिं फिरिहैं राम।
तौ तृणसम तनु आपनो देहौं तजि यहिठाम॥

तनमन अरपित भरत निहारी। तब सुरसरि तिय वेष सुधारी॥
चन्द्रबदनि शुभ पंकज नैनी। सकल सुभग तनु कोकिलबैनी॥
सन्मुख बैठि भरत सुखरूपा। लगीं देन उपदेश अनूपा॥

दो० हे रामानुज रामप्रिय हे सुबुद्धि बलबीर।
प्रणकीन्ह्यो अब तासुकर सुनु विवेक मतिधीर॥

राम सच्चिदानन्द स्वरूपा। आदि नत्रादि अखिलसुरभूपा॥
ब्रह्मादिक ज्यहि पार न पावैं। नेति नेति निगमागम गावैं॥
ताहि न सुत भ्राताकरि मानौ। सर्वोपरि त्रिभुवनपति जानौ॥
विधि हरि हर कारणकर जोई। परब्रह्म परमात्मा सोई॥

निज इच्छा भूतल तनुधारी। जनपालन खलगण अघहारी॥
चले बिपिन सुरकाज सुधारन। गोद्विज सन्त धरणि उद्धारन॥
दशमुख सुर नर मुनि दुखदाता। जात वधनहित त्यहि सुरत्राता॥
ताहि मारि प्रभु करि सब काजू। आय अवधपुर करिहहिं राजू॥
राज बैठि देहहिं सुख भूरी। त्रिभुवन रही सुयश भरि पूरी॥
ताते तात हठहि जनि करहू। उठहु राम आयसु शिर धरहू॥

दो० यहिबिधि अमित प्रबोध करि भई अदृश तब गंग।
भरत हृदय सुनि शिख सुखद परमानन्द उमंग॥
चरण कमल रघुवीरके परे भरत तब धाय।
करजोरे बिनती करत प्रेम न हृदय समाय॥

भरत सवैया॥ जय प्रभु पालन देवधरा मुनि संतनके दुखवृन्द निवारन। शील समूह उजागर नागर आगर बुद्धि गुणाकर पारन॥ छोह सकोह न द्रोह जरा जग मंगल काज सुसाज सवांरन। राजिव लोचन राम कृपा भगवन्त करौ जनदीन उधारन॥ मैं सह दोष अदोष सदा प्रभु आपु उदार सुस्वामि अतूल्यो। देखि सुभाउ सुराउरको लखि आपनि ओर हिये शर हूल्यो॥ नाथ कृपा किय आपु यथा अब त्योंहिं हमेश रह्यो अनुकूल्यो। त्यों भगवन्त सुजानि हमैं पदपङ्कज दास न सूरति भूल्यो॥

दो० अब कृपाल म्वहिं करिकृपा सो अवलम्बन देव।
अवधि अब्धि ज्यहिपार प्रभुपावों करि त्यहि सेव॥

मालिनीछन्द॥ दिनकर कुलकेतू सत्य संकल्प यस्या। सुजन मुद प्रदाता विश्व आश्रै सुतस्या॥ अगम निगम बानी नेतियः नित्य गायो। भरतहि स्वइ स्वामी प्रेमसा अंकलायो॥ बहु बिधि करि बोधे पाँवरी पायँ दीन्हे। सुखयुत हरि भ्रातैं धारि माथे

सुलीन्हे ॥ सुखनिधि भगवन्तै देखि देवालि हर्षे। जयजय करि भूपै भूरि पुष्पानिवर्षे ॥ उपेन्द्रवज्राछन्द ॥ श्रिरामचन्द्रै पदपीठ पाई। मुदातिभर्तै नहिंही समाई ॥ प्रजा निश्रानै जनु त्रात हेतू। किये द्विजामीक भवाब्धि सेतू ॥ सनेह बन्धू शुभ रत्न सोई। सुता सुसंपुट्ट खराउ देई ॥ सुभाय जीवै हित रक्ष कर्नै। सुनाम रामादिय ढैक बर्नै ॥ दिनेश कुलधाम सुमध्य जाके। सुकर्म मै सोधन पूर्ण ताके ॥ कपाट दोऊ पदपीठ बेशू। दिये सुरक्षा हित राघवेशू ॥ श्रिराम सेवा मय धर्म जोई। युगाक्षताके पदपीठ दोई ॥

दो० चरणपीठ रघुवीरके पाय भरत सुखधाम।
अस सुख मन मानहु भवन रहे लषण सिय राम ॥

सवैया ॥ सन्तोष अपार भयो भरतै दुख दोष सबै तनदूरिगयो। लखि सन्मुख स्वामि प्रसन्न हिये जनु गूँगहि बानि प्रसाद भयो ॥ करजोरि बिनय बहु भांतिन कै पुनि पङ्कज पाँयन शीश नयो। जगजीवन लाहु लह्यो भगवन्त भयो सुखज्यों प्रभुसाथ लयो ॥

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मज भगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रन्थेअयोध्याकाण्डेभरतपुरगमनहेतुप्रभुआज्ञावर्णनोनामत्रिदशोऽध्यायः १३ ॥

दो० सीताराम कृपायतन सकल सुमंगल धाम।
चरण कमल कर जोरिकै पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥

तब कर जोरि भरत मृदुबानी। बोले प्रभु गुरु आयसु मानी ॥
तब अभिषेक हेत रघुनाथा। आन्यउ सकल सुतीरथ पाथा ॥
त्यहि कहँ जवन रजायसु होई। करौं नाथ मैं सादर सोई ॥
अवर एक अभिलाष विशेखी। चित्रकूट बन आवउँ देखी ॥
सुनि प्रभु कहा जाहु किनताता। आवहुदेखि विपिन सुखदाता ॥

मुनि अत्रे आयसु जहँ होई । तीरथ जल थल राखेउ सोई ॥
पाइ निदेश मुदित द्वउ बीरा । आये मुनि अत्री के तीरा ॥
कीन प्रणाम चरण शिरनाई । मुनि बर आशिष दीनसुहाई ॥
करि आदर समीप बैठाये । तब मुनि ते अस भरतसुनाये ॥

भरत दोहा ॥

सकल सुतीर्थन केर यह है अति पावन पाथ ।
याहि राखिये कवन थल कहिये श्री मुनि नाथ ॥

अत्रि दोहा ॥

कामद गिरि पश्चिम निकट है अति सुन्दर कूप ।
तामें यह तीरथ सलिल राखिय परम अनूप ॥
मुनि समेत द्वउ बन्धु पुनि सुभग कूप तट जाय ।
मुनि शासन सादर भरत कीन्ही स्वई उपाय ॥
मुनि बहु महिमा कूपकी भरतहिं कह्यो सुनाय ।
भरतकूप यहि आजु ते कहिहैं सब सुखदाय ॥

सवैया ॥ यह कूप अनूप पवित्र महा महिमा मुख क्यों कवि गाय कहै । यहि मज्जन प्रेम सनेम लिये सप्रयास बिना अघ पुञ्ज दहै ॥ मन काय गिरा तन पावन ह्वै सब तीर्थनको फल त्यों सु लहै । भगवन्त कृपा सिय राघवकी यह कूप महा सुखरूप अहै ॥

त्रोटक छंद ॥ महिमा इमि कूप बखानतही । गय राजत राम कृपाल जही ॥ प्रभु सों मुनि अत्रि सुनाय कहा । वहि तीरथ पुण्य प्रभाव महा ॥

दो॰ भोर भये मंदाकिनिहि करि मज्जन द्वउ भाय ।

॥ रामचन्द्र गुरु अत्रि को सादर आयसु पाय ॥
चले अटन रघुबर बिपिन युत समाज द्वउ भ्रात।
निरखि बिपिन शोभा अमित हृदय न हर्षसमात ॥

चंचरीक ॥ राजत बन अति बिशाल सोहहिं द्रुम सुखदशाल वेष्टित नव लता जाल मंजुल छबिछाई। बोलत खग सहित चाय डोलत शुभ त्रिविध वाय परसत सुखप्रद सदाय संचित दुखहाई॥ फूले शुभ कमलताल गुञ्जत बहु भ्रमरमाल पीवत रस बस निहाल संकुल सुख छाके। बिहरत मृगगण स्वछन्द नाचत कल केकि वृंद उमगत अतिशय अनंद निरखत सुखमाके ॥ मंदाकिनि सरित पास कीन्हें मुनिजन निवास संतत जहँ सब सुपास सुमिरत रघु-बीरै। कामदगिरि बर बिशाल देखत दुख दहत जाल राजत जहँ नित कृपाल भंजन भव भीरै॥ शारद शिव निगम शेष संतत मिलि करहिं लेख पावहिं नहिं लिखि अशेष काननै प्रभुताई। सानुज जहँ सीयराम राजत सुख सुछबि धाम सुमिरत भगवन्त नाम कीरति कल गाई॥ कुण्डलिया॥ भरत पांच दिन माहिं सब देखे बिपिन मँझाय। ज्येठ कृष्ण त्रैदशि दिवस बोले प्रभु-सन जाय॥ बोले प्रभुसन जाय देहु अब मोहिं रजाई। सेवहुँ अवधहिजाइ अवधिभरि श्रीरघुराई॥ श्रीरघुबीरकृपाल हृदै जन दोष न धारत। भरतहि लीन लगाय धायउर प्रेम सँभारत॥ राम वचन त्रोटकछंद॥ सुनि तातहृदै मम बातधरो। कछु राजस धर्म बखानकरौं॥ कबहूं नहिं झूठ बखानकरै। बरु संकट कोटिक आनि परै॥ निज मंत्रिहि रासय मूढ़नहीं। दैकै पुनि फेरि नले कबहीं॥ अनजान कि वस्तु न भोगकरै। सब सों हितमान न वैरधरै॥ दुख देइ न मित्रहि आपु निजै। कबहूं नहिं भूलि सताव द्विजै॥ रिपु

कौ विसवास करै न कवौ। मदमांस कुभोग बिहाइ सबौ॥ नहिं काहुहि देइ वृथाहि सजा। समपुत्र निते प्रतिपाल प्रजा॥ परनारि बिलोकय मातुसमा। परद्रव्य मनो विषपुंज जमा॥ नहिं मोह न द्रोह न कोहहिये। मनखैंचिरहै हरिओरदिये॥ सतसंगतिकै उरभक्ति धरै। भगवंत सो भक्त विचारकरै॥ हरि कीरति कान सुनै नितही। कृत पूजनपाठ सुदै चितही॥ रिपु सों रणरोर जु आनिपरै। नहिं गुप्त सुमंत्र प्रसिद्धकरै॥ कवि कोविद सज्जन मान सभू। कटुबैन कहै मुखसों न कभू॥ जप संयम ध्यान सुव्रत करै। श्रद्धानिज माफ़िक धर्मसरै॥ नृप चातुर जौन चलै यगती। त्यहि लाग कवौ नहिं दोष रती॥

दो॰ यहि विधि रघुपति भरतकहँ करिप्रबोध समुझाय।
कहेउ मानिमम बचनअब सेवहु अवधहि जाय॥

सुनि रघुबीर बचन अभिरामा। पुनिपुनि भरत कीनपरणामा॥
भरतहि राम लीन उर लाई। प्रेम पयोधि मग्न द्वउभाई॥
बारहिबार भेंटि धरि धीरा। पुनि रिपुहनहि मिले रघुबीरा॥
लषण भरत रिपुहन तिहुँभाई। भेंटे परम सनेह बढ़ाई॥
जननिन सकल भेंटि रघुनाथा। जाइ जनक पद नायउमाथा॥
करि बहु विनय चरण शिरनाई। गुरु पद पद्म परे द्वउभाई॥
पाइ अशीशा मुदित रघुनायक। मिलेसबहिजोजनज्यहिलायक॥
सानुज भरत सु मुनिगण बन्दे। शुभआशिषलहि परमअनन्दे॥
पुनि सिय चरण धूरिधरि शीशा। चले मुदितमन पाइअशीशा॥
पुनि सिय सासुन सकलजुहारी। लहि अशीश मन भईसुखारी॥
दो॰ यहि विधि सबहिन भेंटिमिलि रामरजायसु पाय।

कीन गवन अवधहि भवन रामचरण चितलाय ॥
सबहि पठै रघुबीर पुनि कीन्हे बिदा निषाद।
अनुज जानकी सहितथल फिरे सहर्ष बिषाद ॥

कवित्त ॥ सानुज ससीयराम सुखमै सपूर्णकाम बैठिकै सुपर्ण धाम भंजन सकोचनै। प्रिया परिवारके वियोगहि सँभारि उर रहे बिलखाय सो सुभायवश शोचनै ॥ कायमन बचन प्रतीति प्रीति प्रेमचारु श्रीमुख सुगाय बाँरबार कंज लोचनै। भाग्यवंत भारत सुभायको सुभाव शील गुनतसप्रेम भवफंदन विमोचनै ॥

दो० सुरन देखि रघुबीर को शील सनेह सुभाव।
जयजयकरि बरषहिंसुमन बिगत शोचमनचाव ॥

इतै भरत सब संग सहाये। चौथे दिन कौशलपुर आये ॥
जनक चारि दिनकरि तहँबासा। सबबिधि सबहि बसाइसुपासा ॥
कीनगवन निज पुर महिपाला। उर धरि सिय रघुबीर कृपाला ॥
रामचंद्र सिय दर्शन लागी। अवधलोग सबअतिअनुरागी ॥
लगे करन जप तप ब्रत दाना।ज्यहिबिधिमिलहिंरामभगवाना॥
भरत कह्यो रिपुहनहिं बुलाई। करेहुसकल जननिन सेवकाई ॥
आपु मातु गुरु आयसु पाई। नन्दिग्राम रहे तब आई ॥
करि मुनिवेष बिषय सुख त्यागी। लगेकरन तप कठिन सुभागी ॥
सिंहासन पदपीठ पधारी। मन बच क्रम सेवा अनुसारी ॥

सवैया.॥ सुरराज सिहातहैं औध कि राज धनै सुनिकै धनराज लजे। अस बैभव पुंज सुप्राप्ति जहाँ बिधि आपु सबै सुख आनि सजे ॥ पुर तासु बसैं इमिभर्त यथा तजि भृंग सु चम्पक बागमजे।

बच मानस कर्म सुभूषण भोग सबै मन सों तृण तूरितजे ॥ रघुबीर के बंधु सुप्राण प्रिया पुनि भक्तशिरोमणि वेदबकै । गुणमंदिर सुन्दर ज्ञानमई यशगावत शारद शेषथकै ॥ भगवन्त सदा प्रभु सन्मुख जे दिशितारज भूलि कबौनतकै । सिय रामसनेह पयोनिधि भर्त बिषै तिनको करि काहसकै ॥

दो० भरत कथा अकथा अमित मुनिन मथा नहिं पार ।
तदपि यथा बुधि मैं तथा बरण्यो ग्रंथ मँझार ॥
जे गावहिं यह प्रेम युत भरत चरित सुख रूप ।
राम कृपा भगवन्त पुनि ते न परहिं भवकूप ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे अयोध्याकाण्डेभरतचरितबर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

इतिअयोध्याकाण्डसमाप्तम् ॥

---




# भक्तिशिरोमणि आरण्यकाण्ड।

कवित्त ॥

धर्म्म द्रुममूल भव शूल के हरणहार लीन्हे हैं त्रिशूल पाणि शत्रु दल दालिया। लोचन त्रिलाल भाल धारे शशि कण्ठ काल-कूट ग्रीव मुण्डमाल शीश गंग कालिया॥ रीझत सुभाय फल फूलही को पाय दान देत ना अघाय भव भूतराय जालिया। भाग्यवन्त दासनके त्रासन हरणहार द्रवो सो उदार नौमि शंकर कपालिया॥ सवैया॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल आनँद कंद सुपूरण कामैं। पङ्कज नैन झुकी भृकुटी शिर जूट जटास्य प्रभा सुख धामैं॥ पाणि शरासन बाण कसे कटितूण लसैं बन मारग तामैं। कै पुटपाणि प्रणाम करौं भगवन्त सदा सिय लच्मण रामैं॥

दो० श्रीगुरुचरण प्रणाम करि सिय रघुबीर मनाय।
जरा मरण भवभय हरणि कहौं कथा शुभगाय॥
सुनहु शिवा सुन्दर कछुक वरण्यो भरत चरित्र।
अब पुनि श्रीरघुबीरको वरणौं चरित विचित्र॥
रुद्रबर्ष अरु रुद्रही मास और दिन बीश।

चित्रकूट सुख जूट इति बास कीन जगदीश ॥
एकबार रघुबीरको लक्ष्मण आयसु पाय।
सुरभित सुमन सुबीनि बहु लाये बनते जाय ॥
तिन्हके भूषण बिबिध बिधि निजकर राम बनाय।
पहिराये श्रीजानकिहि शोभा बरणि न जाय ॥
तैस्यहि निजकर जानकी रचि भूषण बहु भांति।
पहिराये श्रीराम तन बरणि न सो छबि जाति ॥
फटिकशिला सुन्दर परम दायक मन अभिराम।
बैठे प्रभु सीता सहित लाजहिं लखि रतिकाम ॥
शीतल मंद सुगंध बर डोलत त्रिबिध सुबाउ।
चहुँ दिशि सुन्दर द्रुमनपर रहे बिहँग करि चाउ ॥
इन्द्र सुवन लखि मोहबश भरम्यो दुखद अभाग।
समुझि मनुज देखन चह्यो प्रभुबल ह्वैके काग ॥
सिय पद चोंच प्रहार करि चल्यो भागि मतिमंद।
निरखि रुधिर शर सुमन सजि मार्यो रघुकुल चंद ॥

कुण्डलिया ॥ मार्यो प्रभु शर कोपिकै चल्यो भागि बशत्रास। भ्रमि आयो सब लोक त्यहि बाण न छोड़्यो पास ॥ बाण न छोड़्यो पास रहन काहुइ नहिं दीन्ह्यो। व्याकुल भय दुख दीन मिल्यो नारद सिख लीन्ह्यो ॥ नारद सिख लहि जाइ राम पहँ त्राहि पुकार्यो। त्याग्यो करि यक नैन कृपाकरि ताहि न मार्यो ॥

सवैया ॥ बश मोहकियो खल द्रोहमहा करिबो बध तासु उचित्त रहै। प्रभु छाँड़िदियो करि भूरि कृपा न रह्यो अपराध सुयोग्यस है ॥ भगवन्तकहौ तिहुँलोक बियो रघुबीरसों कौन कृपालुअहै। असजानि स्वभाव कृपामयसो शरणागत राम कि क्योंनगहै ॥

॥ राग बसन्त ॥ यहिभाँति रामबसि चित्रकूट। किय चरित चारु श्रुति सुखद जूट ॥ अनुमान पुनि मनकीन राम। बनिभीर रहिहै विदित धाम ॥ तब बिदामाँगि सब मुनिनतेसु। किय मुदित गवन रविकुलदिनेसु ॥

॥ दो० मुनी अत्रिआश्रम जहाँ तहँ आये श्रीराम।
सीता अनुजसमेत प्रभु कीन्हे दण्डप्रणाम ॥
मुनिवर धाय उठाय तब लीन्हे हृदयलगाय।
निरखि राममुख चन्द्रछवि मनवांछित फलपाय ॥
आसनवर बैठारि तब करि पूजन सनमानि।
कन्दमूलफल अशनहित दिये रामकहँ आनि ॥
नखशिखछवि रघुवीरकै निरखि सुमुनि सुखमानि।
लगे करन अस्तुति मुदित जोरि जलजयुगपानि ॥

॥ हरिगीतिका छन्द ॥ जय रामनौमिकृपाल कोशलपाल त्रिभुवननायकं। सुखधाम अति अभिराम पूरणकाम जनमन भायकं ॥ नवनील नीरज चारु लोचन शीलसिन्धु उजागरं। आजानु भुज परिपूर्ण विक्रम अमित वैभव नागरं ॥ धृत रुचिर शायक चाप तरकस बैरि दलबल गंजनं। निःकाम श्यामस्वरूप सुन्दर भक्तवत्सल रंजनं ॥ ब्रह्मादि सुरपद कमलसेवित असमशर अरि बन्दितं। अति शुद्ध विग्रह बोधमय मुनि सन्तसज्जनरंजितं ॥ तव चरण पंकज मूल जेनर भजत तजि मदकामही। भवसिन्धु घोर पतंति ते नहिं देत प्रभु निजधामही ॥ तुम एक अद्भुत अमित ईश्वर जगतगुरु जनपालनं। भवसिन्धु दुर्गम मथन मन्दर प्रबल खलदल दालनं ॥ रवि बंश हंस प्रशंस रघुपति भूमिजापति पावनं। शिवचाप खण्डि अखण्ड कीरति लोकतीनि सुहावनं ॥ भगवन्त सानुज शक्तिसह

नित नौमि करुणा कीजिये । निजभक्ति भक्तन सुखद रघुपति जानि जन म्वहिं दीजिये ॥

दो० सुनि मुनिविनय सप्रेम तव हरषे मन अति राम ।
अनसूयाके चरण पुनि कीन्ही सीय प्रणाम ॥

मिलिसप्रेम सीतहि मुनिनारी । आशिरबाद दीन सुखकारी ॥
अति आदर समीप बैठारी । भूषण वसन अनूप निकारी ॥
जे नित नवल रहत छविधामा । पहिराये सीतहि मुनिवामा ॥
पुनि सप्रेम ऋषिनारि पुनीता । बोली सुनु स्वामिनि जगसीता ॥
कहौं कछुक तिय धर्म सुहावा । निगमागम पुराण जसगावा ॥
नारि देव केवल पतिमानै । पतितजि स्वपनेहु अपरनजानै ॥
जननी जनक बन्धुहित जेते । अल्प सुखहि दायक सब तेते ॥
पंच वर्षलौं जननी सेवै । लालन पालन करि सुखदेवै ॥
पिता बरष दशलौं जसचाही । भोजन बसन देतहै वाही ॥
पुनि बिवाहि दायजु कछुदेई । करि त्यहि बिदासु फुरसतिलेई ॥
पर्ब त्योहार भ्रात तहँ जावै । किंचित धनदै फिरि पुनिआवै ॥
जन्मप्रयन्त सकल सुखताही । देत नाह मोसिर जसजाही ॥
ताते अधम नारि है सोई । मनवचक्रम पति सेव न जोई ॥

कुंडलिया ॥ पावै पतिकरि नारिजो अंध बधिर अति दीन । वृद्ध रोगवश जड़अधन क्रोधी निपट मलीन ॥ क्रोधी निपट मलीन सहैदुख ताकेसाथा । तदपि न हेरै भूलि नारि दिशि और न नाथा ॥ नाथहिं जो असपाइ तासु अपमान करावै । नानाविधि सो जाय सदन यमके दुखपावै ॥

दो० चारिभांति जग पतिव्रता बरणत नारी वेद ।
उत्तम मध्यम नीच लघु कहौं सबन के भेद ॥

सवैया ॥ न.हहि रङ्ग रँगी जु रहै बच मानस कर्म्म भजै पति जोई। औरन ओर न भूलितहै बिभु प्रापति शक्रसमान जु होई॥ स्वप्नेहु जानन सो मनमें जगतीतल पूरुष आनहु कोई। यों भगवन्त गहै दृढ़धर्म पतिव्रत नारि है उत्तमसोई॥ आपन स्वामि गनै करि स्वामि बिचारत यों परकन्त निहारी। वृद्धहि तात युवा सम भ्रात सुवैलघु पेखत पुत्र बिचारी ॥ और कुभाव हिये न धरै पति सेवकरै निज धर्म सँभारी। यों भगवन्त सुरीतिं जिन्हैं नित भाषत सो श्रुति मध्यम नारी॥ प्ररपूरुष सुंदर देखतही ह्वयजात सकाम है बामज्वई। निज धर्म्म कि हानि बिचारि हिये कुलकी मरयाद सुजानि स्वई॥ रहती बचि है परपी रतिते करती अपराध न और कई। भगवन्त बखानत वेदरहै यहिरीति जु नारि निकृष्ट स्वई॥ देखि जिन्हैं परनाहन को चित चौगुन चाहभई रतिठानै। पै न मिल्यो त्यहि औसर शून्य सुत्रास कछू गुरु लोगन मानै॥ कारण याहि करै व्यभिचार न राखत पै मन कामकलानै। सोइहै नीच महाधम नारि सुलक्षण ये श्रुति शास्त्र बखानै॥

दो० निजपति सों छल ठानि कै परपति में रतजौन।
रौरव नरक सुकल्पशत परै नारि ध्रुव तौन॥
पतिव्रत धर्म जु छांड़िछल गहै नारि दृढ़ जोइ।
बिनुश्रम पावै परमपद कहत वेद बुधलोइ॥
तुमहिं प्राणसम प्रियसतत सुनु सीता भगवान।
जग उपदेशन हेतु यह कीन्ह्यों कथा बखान॥
अनसूया के बचन सुनि जनकसुता सुखपाय।
बारहिंबार प्रणाम किय चरणकमल शिरनाय॥

छप्पै॥ तब मुनिते प्रभु कह्यो नाथ अब आयसु देहू। जाउँ अ-

परखन देव तजव जन जानि न नेहू॥ सुनि बोले ऋषिराज राम अस काह्यन कहहू। तुम सरवज्ञ सुजान सर्वगति जानत अहहू॥ प्रभु कृपासिंधु सज्जन सुखद सेवत सब सुख पाइये। सुखधाम राम क्यहिभांति मैं कहउँ स्वामि वन जाइये॥ सोरठा॥ बारबार शिरनाय करि प्रणाम मुनि पद कमल। सीय सहित द्वउभाय चले बिपिन भंजन विपति॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डेजयंतनेत्रभंगप्रभुअत्रिमुनिसमागमअनसूयापातिव्रतधर्म वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० श्रीरघुपति पद पद्मको पुनि पुनि करौं प्रणाम।
जिनकी कृपा कटाक्षते सिद्धि होत सब काम॥

सीता लषण सहित रघुराई। चलेविपिन मुनि आयसु पाई॥
सुन्दर श्याम गौर सुखधामा। निरखि होहिं परिपूरण कामा॥
रामहिं चलत कठिन मग देखी। भइ कोमलमहि आपु विशेखी॥
गिरि कानन मग देहिं सुहाये। रहहिं मेघ छाया नभ छाये॥
यहि बिधि राम जाहिं सुख पागे। मिलाबिराध असुर यक आगे॥
अतिविशालतनु बरणि न जाई। प्रभुहि विलोकि चला सोधाई॥
अतिरिस लागि कहन कटु बैना। तब मारयो प्रभु मुनि शरपैना॥

दो० लागत शरतनु तजि भयो दिव्यरूप ततकाल।
देखि दुखी निज धाम त्यहि दीन्ह्यो राम कृपाल॥

छंदतोटक॥ पुनि सानुज रामसियाहि लये। शरभंग ऋष्याश्रम जात भये॥ लखि रामप्रभा मुनि मोद भरे। कर जोरि विनै वहु भाँति करे॥ तुम नाथ अनाथन नाथहिते। किये भूरि कृपादृग कोर चितै॥ अब जाहु न आन कहूँ तबलौं। तनु त्यागि तुम्हें न मिलौं जबलौं॥ जप योग मखादिक जौन किये। प्रभुको दयभक्ति

बरै सु लिये ॥ इमि जोरि चिता चित प्रेम भिये। सिय लक्ष्मण राम सुधारि हिये ॥ तनु जारत योग सु अग्नि भयो । सिय राम कृपा करि धामदयो ॥ सवैया ॥ शरभंगहिं रामदियो निजधाम बिलोकि सबै मुनि मोदभरे । बहु भाँति प्रशंसि सुनाय बिनै त्रयरूप अनूप हृदय सुधरे ॥ सुर सानँद व्योम बिमान चढ़े जय जयति पुकारत फूलझरे। भगवन्त कृपा सियराम सबै मगबासिनके सबकाजसरे॥

पुनि आगे गवने सुखकन्दा। मिलहिं अनेक मुनिनके वृन्दा॥
भेंटि भेंटि सबही सुख देता। जाहिं चले प्रभु कृपानिकेता॥
अस्थिअमितलखिबिपिनकृपाला। बूझे मुनिन कहेतिन हाला॥
नाथ निशाचर अति दुखदाई। लीन्हे बिपुल मुनिन कहँखाई॥
मुनि द्वै दुखित राम प्रणकीना। करिहौं धरणि निशाचर हीना॥
मुनिं प्रण भये मुदित बनबासी। चले राम सुखधाम बिवासी॥
रहे जहां जहँ मुनि सु प्रवीना। तहँतहँ जाइ सबन सुख दीना॥

दो० मुनि अगस्त्यकर शिष्यबर नाम सुतीक्षण जान।
कर्म बचन मन रामरति प्रभु आवत सुनि कान॥

छंद हरिगीतिका॥ धायो मनोरथ करत बहु बिधि सपदि सुख पूरण हियो। अवलोकिहौं इन जाय नैनन रूप ज्यहि सम नहिं बियो॥ अति पुलक निर्भर प्रेम तन मन सुरति सब बिसराइकै। फिरि जात पाछे कबहुँ आगे करत नृति गुण गाइकै॥ अवलोकि प्रभु अति प्रीति मुनि उर प्रगट निजरूपहि किये। ज्यहि पाय मुनि द्वै सुथिर मग महँ बैठ मन मूरति दिये॥ छंदनाराच॥ तबै श्रिराम धायके मुनीश पासको गये। थके जगाय जाग सो न चित्त ध्यानमों दये॥ लिये दुराय राम सो स्वरूप भूपको तबै। दिये दिखायं चौभुजी स्वमूर्ति हीय में जबै॥ लख्यो मुनीश हीय में

जबै न राम रूपस्वै। उठ्यो विकल्ल वेगि ज्यों फणीश मन्नि जाय स्वै॥ बिलोकि ठाढ़ि अग्र रामचंद्र सीय लक्ष्मणै। भयो प्रमोद पुञ्ज तौ प्रगट्टही सुतीक्षणै॥ कियो प्रणाम धाय तौ श्रिराम हीय लायऊ। सप्रेम भेंटि बारबार मोद पुञ्ज छायऊ॥ चतुरंसाछंद॥ तब मुनि नाथा। करिपुट हाथा॥ बिनय सुनाई। प्रभुहिं लिवाई॥ निजथल आये। अरचि सुभाये॥ प्रभु छबि देखी। हरषि विशेखी॥ करन सु-लागे। बिनय सुभगे॥

दो० जै रघुबर जै जानकी जै लक्ष्मण सुखधाम।
जै प्रभु त्रिभुवन पति सुखद प्रणतपाल शुभनाम॥

॥ रोला छंद॥ नौमि राम सुखधाम तामरस श्यामशरीरं। नौमि मुकुट शिर केश वेश परिधन मुनि चीरं॥ नौमि चाप शर पाणि लसत कटि तट तूणीरं। नौमि सदा सर्वज्ञ शमन संसृत रणधीरं॥ नौमि गहन घन मोह दहन वर वृहद करालं। नौमि सुखद सुर संत प्रणत प्रतिपाल कृपालं॥ नौमि रजनिचर वृन्द करिन दालन मृगराजं। नौमि सदा जन त्रातु शमन भव भय खगवाजं॥ नौमि अरुण जलजाक्ष सुभग संताप विनाशं। नौमि भुजाक्ष चकोर सुखद विधु बदन प्रकाशं॥ नौमि ईश काशीश मानसर हीयम-रालं। नौमि सुबाहु ससेन दलन उर बाहु विशालं॥ नौमि सकल संशयक सर्प ग्रासक उरगादं। नौमि कुतर्क कुपीर शमन उर बि-षम बिषादं॥ नौमि हरण महिभार शरण प्रतिपालक रामं। नौमि सदा मम त्रातु कृपा पूरण सुखधामं॥ नौमि सगुण गुण रहित बिषम सम रूप अनूपं। नौमि गिरा गुणज्ञानपरेपरमात्मा रूपं॥ नौमि अखिल अनवद्य अनघ अल अमल अपारं। नौमि राम राजेन्द्र शमन कलिकलुष बिकारं॥ नौमि भक्तप्रद भव्य कल्पतरु

तारणनामं। नौमि क्रोध मद लोभ हरण मोहादि सकामं ॥ नौमि निरंतर नित्य निरत नयनागर रामं। नौमि भानुकुल केतु सेतु भवनिधि छवि धामं ॥ नौमि अतुल भुज तेज बिपुल बलधाम अजीतं। नौमि अनाथन नाथ सुयश श्रुति गाव पुनीतं ॥ नौमि धर्म बरबर्म सुखद गुणग्राम अपारं। नौमि नौमि मम त्रातु सदा सिय राम उदारं ॥ कबित्त ॥ बिस्तृत प्रताप पुंज पावन त्रिलोक यश कीरति उदार कलगाय सुख भीजिये। दीनबन्धु साहेब समर्थ चित्त कारुणीक कृपया कटाक्षकै सुदास दुःख छीजिये ॥ बीरद गँभीर भवभीरको हरणहार कौशल कुमार सो सँभार चित्त कीजिये। भाग्यवन्त जानि जन जानकीश जानमणि भावनी सुभव मोहिं भक्ति निज दीजिये ॥

दो० औरहु यक प्रभु करि कृपा पूरण कीजै आस।
सिय समेत द्वउ बन्धु मम हृदय करहु नितवास ॥

सुनि मुनि बिनय राम सुख पाई। एवमस्तु कहि पद शिरनाई ॥
मुनि समेत पुनि चले सुभाये। कुम्भजऋषि आश्रम जहँआये॥
जाय सुतीक्षण गुरु पहँ आगे। करि प्रणाम बोले अनुरागे ॥

सवैया ॥ नाथ जिनहिं नित ध्यावतहौ निशिबासर सादर ध्यानहि लाये। जासु प्रभाव प्रसिद्ध महा यश पावन बेद पुराणन गाये ॥ सानुज सीय समेत जिन्हैं भगवन्त हृदय निज शंभु बसाये। कोशलराज कुमार स्वई मुनिराज मिलै हित राउर आये॥ छप्पै ॥ सुनत सुतीक्षण बैन हरषि कुम्भज उठिधाये। निरखि राम छबिधाम जलज लोचन जल छाये॥ सीता अनुज समेत परे प्रभु चरणन्ह जाई। अति सप्रेम ऋषिराज लिये गहि हृदय लगाई ॥

पुनि पूँछि कुशल सादर प्रभुहि आसन बर बैठायके। करि बिविध भांति पूजन ऋषय मुदित जन्म फल पायके॥
तब प्रभु कह्यो सुनहु मुनिराया। देहु सोमन्त्र हमहिं करि दाया॥
हतौं जाहि सुर मुनि दुखदाता। सुनि मुसकाय कह्यो मुनि बाता॥
तुम समर्थ सर्वज्ञ कृपाला। जानतहौ सबही कर हाला॥
मैं तव चरण कमल अनुगामी। देउँ कवन मत तुम कहँ स्वामी॥
जानि दास निज मान बढ़ावा। प्रणतपाल यश बेदन गावा॥
भक्ति आपनी सब सुखदायक। देहु कृपा करि म्वहिं रघुनायक॥
सो स्थान कहौं अब गाई। सीता सहित बसौ जहँ जाई॥
गोदावरी निकट अति पावन। पंचवटी आश्रम मन भावन॥
तहँ बसि राम सबहिं सुख भेंटौ। करि बन स्वच्छ शाप पुनि मेटौ॥

कुण्डलिया॥ दण्डक नृप यकबार तहँ शुक्रसुता सन आय। बरबस कीन्ह्यो भोग मुनि दीन्ह्यो शाप रिसाय॥ दीन्ह्यो शाप रिसाय नृपहि तव राज्य समेता। सात दिवस के माहिं दहै यह कानन जेता॥ जेता बन भयो भस्म हरहु स्वइ शाप अखण्डक। राम बसहु तहँ जाय करहु पावन बन दण्डक॥

सुनि अगस्त्य आयसु शिरनाई। चले ससीय मुदित दउ भाई॥
आगे मिल्यउ गीधपति जाई। बहुबिधि तिनसन प्रीति बढ़ाई॥
गोदावरी दीख प्रभु जाई। पंचवटी सुन्दर सुखदाई॥
तहँ रचि पर्णकुटी अभिरामा। कीन निवास लषण सियरामा॥
राम लषण सिय पद परिपावन। मिटी शाप बन भयो सुहावन॥
मुनि तापस सुर सिद्ध उदासी। भये सुखी सब कै भय नासी॥
खग मृग रहहिं सकल सुख पूरे। बिगत बैर बिचरहिं बनरूरे॥
बनसुखमा अति बरणि न जाई। जहँ सिय राम लषण रहे आई॥

सवैया ॥ आय रहे जबतें द्वउ भाय भयो तबते बन मंगल दा-
यक। पुंज प्रमोद छयो सब ठौर करैं धुनि कोकिल कीर सुहायक॥
नेकु नहीं मन त्रासक्यहूँ सब नाश भये खल वृन्द सतायक। क्यों
भगवन्त कहौं छबि गाय न लोक तिहूँ उपमा त्यहि लायक॥

दो॰ जग पालन घालन असुर रघुलालन छबि ऐन।
आय रहे भगवन्त जहँ को छबि बरणै बैन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेआर
ण्यकाण्डेविराधबधशरभंगकथाअगस्त्यसमागमप्रभुपंचवटीबास
वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

दो॰ रंजन सुरसज्जन सुखद भवभंजन महिभार।
भाग्यवन्त सिय रामपद बन्दौं सब सुखसार॥

सवैया ॥ पंचबटी गुणग्रामजटी सुखपुंजपटी परि दुःखछुटी है।
शुभ्रछटी वरमुक्तिनटी नित नृत्यठटी नवशोभजुटी है॥ पापघटी
परितापहटी भवदापकटी लखि लाहुलुटी है। भागपुटी भगवन्त
छुटी लखि पञ्चबटी प्रभु पर्णकुटी है॥ कवित्त ॥ कैधौं ज्ञानभक्ति औ
विराग बपु धारे आपु कैधौं विधिभारती ससुत आपु राजते। कैधौं
त्रिपुरारि संग गिरिजा गणेशधारि कैधौं ऋतुनाथ युत रतिमैन
भ्राजते॥ कैधौं परमार्थ अरु योगयुत प्रीतिआपु कैधौं बीर शान्त
औ शृँगार सुखसाजते। भाग्यवन्त कैधौं कूर्म शेष सुरधेनु आपु
कैधौं सहसीय राम लक्ष्मण विराजते॥

दो॰ एकबार श्रीरामपद लषणलाल शिरनाय।
अतिसप्रेम करजोरिकै बोले बचन सुभाय॥
हे समर्थ सरवज्ञ प्रभु कृपासिन्धु गुणखानि।
मैं पूछौं कछु आपुसों कहिये निजजन जानि॥

गीतिका छन्द॥ क्यहि कहत ज्ञान विराग काको कौन माया गा-

इये। का भेद ईश्वर जीवसों सद्ग्रन्थ वेद बताइये॥ है भक्ति कौन अनूप जाकहँ करत तवपद पाइये। ज्यहिजाय संशय सुनत मोकहँ नाथकहि समुझाइये॥ त्रोटकछन्द॥ कहिमे सुनु तातहै ज्ञान वही। जहँ एकहु बातको माननही॥ समदृष्टि चराचर माहिं करै। यक ब्रह्ममयी सब देखिपरै॥ त्रिभंगी छन्द॥ सुनु तातसुभागी अति अनुरागी परमविरागी ताहि कही। जो तृणसम तीनों गुणतजि दीनो सिद्धिन कीनो चाहनही॥ पुनि मैं अरु मोरा तैं अरु तोरा जहँलगि जोरा नातजितो। गो गोचर ढारै मनसि विचारै जहँलगि पारै देखि तितो॥ माया सबजानौ मन अनुमानौ अपर बखानौ भेदतदा। प्रथमैं यक विद्या द्वितिय अविद्या परम निषिद्धा वेदवदा॥ जाके बश परिकै हरिहि बिसरिकै कुकरम करिकै होत दुखी। विद्या भलिभावै जो जगजावै हरिहि मिलावै जीवसुखी॥ पुनि ईश्वर सोई समरथ जोई सबपर होई स्वामिज्वई। माया अरु ईशै आपु अनीशै रूप न दीसै जीवस्वई॥ पुनि भक्तिहमारी परमपियारी जन हितकारी तात सुनो। निज तंत्र सदासो सब सुखदासो करत प्रकासो ज्ञानगुनो॥ सो मिलत न तौलौं द्रवत न जौलौं सन्त अतौलौं ज्ञानमई। त्यहिकरन उपाई कहउ सुभाई सुनु चितलाई कान दई॥ प्रथमै द्विजपाँयन प्रीति सुहायन करै सदायन भायसती। त्यहिकर फललागे विषय विरागे भव निशिजागे शुद्धमती॥ तब त्यहि ममचरणन सब दुखहरणन उपज अवरनन प्रीतिनई। श्रवणादिक नवधा भक्तिके पवधा तव सुख सवधा करनठई॥ सुन्दर ममलीला सुनि सुखशीला ह्वै गिलगीला प्रेमपगैं। गुणग्राम हमारे गुणहि सँभारे ते अतिप्यारे मोहिंलगैं॥

दो० कर्मवचन मन छांड़िछल सेवै सन्तसुजान।

सत्यकहौं त्वहि तातते प्रिय म्वहिं प्राणसमान ॥

संत महातम अमित अनूपा। कहिन सकैं शारद अहिभूपा ॥
जिनके दरश किये अघमूला। होयँ शमन जिमि पावक तूला ॥
पूरुब पुण्यभाग जब जागै। तब मन संत चरण महँलागै ॥
करै सदा जो संतन सेवा। ताके वश संतत सब देवा ॥
धन्य संत जे तजि सबकामा। रटहिं नाम सहरति बसुयामा ॥
ईश्वररूप तिनहिं करिजानो। तिनके चरण सदा उर आनो ॥

हरि गीतिका छंद ॥ तजि कामजे बसुयाम ध्यावहिं नाम पावन मन किये। ते धन्य संतत संत ईश्वर देहधरि आपुहि लिये ॥ सब जक्त पावन करण कारण नित्यते भूमें अटैं। भगवन्त जनके मेटि संकट ठाट ते सुखकी ठटैं ॥

दो० सन्त बचन रविकर सरिस जाके हृदय प्रकाश।
मोह अबिद्या घोरतम करत सो बेगि बिनाश ॥

सवैया ॥ सन्तन के गुणग्राम अनन्त न पावत अन्त अनन्त बखानत। औगुण औरनके न गनैं गुण तासु सप्रेम सदै उर आनत ॥ जोपिकरै अपकार कऊ उपकारहि तासु हिये करि मानत। याबिधि सन्तनको भगवन्त सदा श्रुति ब्रह्म समानहि भानत ॥

दो० धन्य सन्त निर हेत जे करें अपरको काज।
ज्यों कपास दुख भूरि सहि राखत औरन लाज ॥

संत चरण रज जो शिरलावै। उपजै ज्ञान भक्ति ममपावै ॥
जप तप तीरथ धर्म अचारू। योग यज्ञ व्रत नेम बिचारू ॥
वेद पुराण पढ़ै बहुभांती। कथै ज्ञान चाहै दिन राती ॥
संत चरण बिनु किये सनेहू। बादितात सर्वस सुनु येहू ॥

कीन्हें बिनु संतन पद नाता। पाव न भक्ति मोरि सुनु ताता॥
संतन बिबश सदा मैं कैसे। हाथ ख्यलार चंग रहै जैसे॥
संत बचन जो मानै सांचा। ताको सुयश लोक तिहुं मांचा॥
पापरूप प्राणी किन होई। संत संग पावै गति सोई॥
अस प्रभाव संतन कर भाई। शेष गणेश सकैं नहिं गाई॥
सकृत प्रणाम किये जिन केरे। पाप ताप नहिं आवत नेरे॥
जिनहिं संत पद प्रेम अभंगा। होहिं सकल तिन्हके दुख भंगा॥
प्राण समान संत म्वहिं प्यारे। होत नहीं क्षण एकहु न्यारे॥
यथा कलेवर संग सदाहीं। रहत बास कीन्हें परिछाहीं॥
जिमि सनेह पय मांझ निवासा। भानु किरण महँ यथा प्रकासा॥
वेतस मध्य यथा द्विजराजा। आखर में जिमि अर्थ बिराजा॥
तिमि मम बास संत ढिग अहई। रक्षा करत चक्र नित रहई॥
संतनते मोंते नहिं भेदा। देवै तात उनहिं जो खेदा॥
निंदा करै किधौं उपहासा। सहित कुटुम्ब करौं त्यहि नासा॥
रौरव नरक बासते पावैं। जे संतन कहँ भूलि सतावैं॥
संत बिरोध किये तिहुँ लोका। पाव न तात कतहुँ सो ओका॥
ज्यों झख बैर अम्बु सों ठानै। करै तासु को रक्षा प्रानै॥
मम अपराध करै जो कोई। करौं क्षमा मैं चाहै सोई॥
भक्त द्रोह जो मनहिं बिचारै। ताकहँ चक्र मोर संहारै॥
अस प्रण मोर भक्त हित लागी। सो न बचै पुनि त्रिभुवन भागी॥

सो० संत कृपा बिनु तात मोहिं न पावै कोटि बिधि।
संतन सों भल नात ताते संतत कीजियै॥
राम बचन सुखदाय परम मनोहर नीतिमय

सुनि लच्मण सुख पाय बार बार वन्दे चरण ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहकर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्य काण्डेलक्ष्मणप्रतिप्रभुज्ञानवैराग्यभक्तिवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० राम लषण श्रीजानकी चरण कमल सुखधाम।
भाग्यवन्त कर जोरिकै पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥

मोदक छंद ॥यों कुछ काल व्यतीत भये जब। शूर्पणखा दश कंध ष्वसा तब ॥ दुष्ट महा विकराल भयावनि। निश्चर बंश कुठारि नशावनि ॥ जाइ तहां लखि कै भगवानहिं। बेधि गई उर काम के बानहिं ॥ धारि सुरूप चलायकै नैनन। बोलत भै भरि चातुरि बैनन ॥ सवैया ॥ सुन्दर श्यामल गौर मनोहर आनन पूरण चंद्र कलाहौ। देखतही चित मोहि लियो भगवन्त सबै सुखमाके थला हौ॥शीश जटा शर चाप गहे कर भावत बीर बड़े प्रबलाहौ। बैठि निशंक महाबन में तुम को कहौ संग लिये अबलाहौ ॥ चक्रव्रती दशरत्थ महीपति कौशलनाथ के हैं हम जाये। राम सुलच्मण नामन संयुत आयसु दै यह तात पठाये ॥ जाय बनै सब मारिकै राकस पालहु जे मुनिवृन्द सुहाये।त्वैं कहु को हसि आपन हाल सुहाल निजै हम देत बताये॥ चंचरीक छंद ॥ लंकनाथ दशास्य की स्वहिं जानिये भगिनी सही। जासुहै ठकुराइ तीनिहुँलोक मानहुँ जो कही ॥ है न पूरुष आन ज्यों तुम नारिहू सम ना हमौ। ताहि ते सुकुमारि हौं अस जानि मो संगमें रमौ ॥

दो० कह्यो नीक सो भामिनी पै कहि सुनो हमारि।
लषण कुमारे जाउ तहँ है मेरे यह नारि ॥

तोमर छंद ॥ सुनि बैन सो सति मानि। तिनसों कही अस आनि ॥ सवैया ॥ राम सहोदर आनँद कोदर हेरहु मो दिशि नैन

उठाई। मैं अनुजा दशकंधरकी तिहुँलोक में जाकरि है ठकुराई॥ राजकुमार रमौ सँग मोहिं करौ पतिनी पति ह्वै मनभाई। जासों लहौ भगवन्त सबै सुख सम्पति सिद्धि समृद्धि बड़ाई॥

कहलच्मण सुनु भामिनि बाता। वैहैं भूपँ सबनि के त्राता॥ म्वहिं सेवकहिं बरे का पैहौ। चेरी ह्वै उपहास करैहौ॥ ताते उनहिंन पास सिधावो। जाते सुयश लोक तिहुँ पावो॥ सुनि सो गई जंहां रघुबीरा। पुनि पठये प्रभु लच्मण तीरा॥

तोटक छंद॥ लखि लच्मण ताहि सक्रोध कही। त्वहिं आवति लाज निलज्जि नही॥ त्वहिंको जग पूरुष जौन बरै। तृणसो निज लाजहिं तोरि धरै॥ बरवै छंद॥ समुझि हास अति व्यंकट रूप बनाय। दौरी मुख पसारि गइ सिया डेराय॥ तब सयनहिं प्रभु लषणहिं दीन बुझाय। ज्यहि विधि सो बरवैमें तुलसी गाय॥ तब लच्मण तुरतै त्यहि नासा कान। लीन काटि भइ व्याकुल मानि गलान॥ चलि खरदूषण पै गइ ठान्यसि फैन। सुनि उठिधाये तुरतै ते सजि सैन॥ गीतिका छंद॥ सजि सैन निश्चर निकर धाये सपर गिरि कज्जल मनो। धृत अस्त्र शस्त्र अनेक आयुध विविध बाहन को गनौ॥ अति होत असगुन अमित ते नहिं गनत मृतुवश राकसा। बाजत अनेक जुझाउ बाजन गरजि तर्जहिं बाकसा॥ कोउ कहत मारहु पकरि दोउन ललित लै ललना लियो। इमि कहत धाये सुभट सबदल अग्रसुपनखहि कियो॥

दो० धूरि पूरि अम्बर निरखि कह अनुजै रघुबीर।
लै सीतहि गिरिकंदरहि जाहु सजग रह्यो बीर॥
प्रभु आयसु लच्मण गये लै सीतहि गिरि खोह।
तब लगि रिपुदल सन्मुखै आइगयो अति कोह॥

छप्पै ॥ तब रघुपति मन बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ायो। बांधि जटा शिर जूट कमरकसि तूण लगायो॥ करशा चाप सुधारि दुव-नदल सन्मुख देख्यो। ज्यों केहरि करि झुंड निरखि मन हरष बिशेख्यो॥ गयमोहि निरखि सबराम छबि सकत न निशिचर डारिशिर। तब निकट बोलि मंत्रिहि बिकल कहतभयो अस बचन खर॥ ये कोऊ नृप सुवन भुवन भूषण छबिऐना। असि शोभाभरि जन्म कतहुँ हम दीख न नैना॥ यद्यपि किहिनि कंसूरभूरि पर बद्ध न लायक। तातें कहियोजाय देहिं निजनारि सुहायक॥ दैनारि जियत द्वउभाय ज्यहि जाहिं भवन निज मानिसुख। नतु मारि गरद म्यलिहौं द्दुहुन परेआइ ममकालमुख॥ सचिवन्ह प्रभुसों जाय बात सब बरणन कीन्ह्यो। सुनि मुसकाने राम तिनहिं अस उत्तरदीन्ह्यो॥ हमक्षत्री मृगयार्थ फिरत बनमें नहिं डरते। तुमसे खल मल राशि खोजि मृगगण संहरते॥ रिपु प्रबल देखि नहिंडरत हम लरत जुरण कालौ मिलहि। नहिं होइ जुबल घरजाहु फिरि भागेन पर करनहिं ढिलहि॥ दूतन प्रभुके बैन जाय निजनाथ सुनायो। खर दूषण त्रिशिरादि सुनत अति क्रोध बढ़ायो॥ बोले तब ललकारि सुभट सब सन्मुख धावहु। नृप बलकन द्वउ बांधि मारिमहि गर्द मिलावहु॥ सुनिचले धाय निशिचर सकल प्रभुपर हाहाकारकय। शर शक्ति शूल तोमर परिघ नानाविधि हथियारलय॥ कुंडलिया॥ तब रघुपति टंकोरिधनु कीन्ह्यों शब्द अपार। सुनि सब निशिचर भे बधिर गिरि गिरिगे हथियार॥ गिरिगिरिगे हथियार सक्यो काहुन संभारै। सावधानह्वै सकल बहुरि धाये तमचारी॥ तमचारिन दलकोपि चल्यो आयुध बहु बरषति। तिलसमान सो काटि बाण निज छांड़े रघुपति॥ भुजंगप्रयात छन्द॥ चलेराम नाराच संग्रामछाये। मनो

पुंज व्यालालि फुंकारिधाये ॥ गये रेलि के पेलि फौजै बिडारी । लगे अंगकाटै भगे रैनिचारी ॥ तबै कोपियों भाय तीनौं पुकारे । जुसंग्राम ते पाँव पाछेकथारे ॥ करौं बद्धमैंही स्वहस्ताजुताको । फिरे ठानिकै मर्ण दै बीर हांको ॥ लिये अस्त्र शस्त्रादि नानाहथ्यारे । लगे कोपि श्रीराम सौं हैं प्रहारै ॥ तिन्हैजानि क्रुद्धाति श्रीरामसांचे । सुसंधानि शारंग छांड़े नराचै ॥ लगे ते बिखण्डै सुराराति अंगे । परेरुंड जैजैति बोलैं उमंगे ॥ कटैं ग्रीवबाहैं हृदे लंकपावैं । बिनामुंड कै रुंड भूमाहिं धावैं ॥ लगेबाण चिक्कार कोई मचावै । कई मुंड बायेमुखै खान धावै ॥ कई काहरैं भूमिपै घांवखाये । कई बाहु लैचाप नाराच धाये ॥ कित्यो तौ लिये कंक औ काक खाहीं । कित्यो नोचि जम्बूक भागैंहु-हाहीं ॥ सजें खप्परै भूत प्रेतापिशाचैं । पिये योगिनी रक्तको मस्त नाचैं ॥ लिये भूरि बैताल भट्टोंकपालैं । बजावैं उठावैं तरङ्गानि तालैं ॥ प्रचण्डाति नाराच श्री रामकेरे । त्रिखण्डैं भुजामुंड आराति घेरे ॥ जहाँ के तहाँ ते दशौ ओरपाटे । बचैबीर ना भागि बे अंग काटे ॥ लिये गीध अंताबरी व्योम जावैं । गहे ताहि भूमैं पिशाचापु धावैं ॥ उड़ावैं पतंगैं मनोबाल लीने । करैं जाल कल्लोल आनन्द भीने ॥ बिलोके निजै सैन बेहाल ज्योंहीं । बढ़े कोपि खर्दूषणादी सु त्योंहीं ॥ गहे अस्त्र शस्त्रादि नानाप्रकारे । कृपासिंधु पैबार एकै प्रहारे ॥ तिन्हैं काटि श्रीराम संग्राम कोपी । सुनाराच दीन्हे दलै शत्रु तोपी ॥

दो॰ दश दश शर रिपुनायकन तब मारे रघुवीर ।
परतभूमि पुनि उठि लरत मरत न ते अतिधीर ॥
सहस चतुर्दश राकसा एक राम सुख ऐन ।
देखि देव डरपत सकल परत न मनमें चैन ॥

सभय देव करुणा निधि चीन्हे। रामरूप सब कटकहि कीन्हे॥
एकहि एक धाय धरिमारा। क्षण महँ सकल भये संहारा॥
राम राम कहि तजेनि शरीरा। भये मुक्त ते सब रणधीरा॥
देखि चरित हरषे सुर भारी। बरषिसुमन जै जयति पुकारी॥
सीता सहित लषण तब आये। प्रभु पद पद्म हरषि शिर नाये॥
निरखि राम छबि भये सुखारे। तब रघुपति निज ढिग बैठारे॥
दो० पंचवटी श्री राम बसि नित नव चरित अपार।
करत जाहि गावत सुनत पावत नर भव पार॥

इति श्रीमद्यशोध्यासिंहवर्म्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेआरण्यकाण्डखरदूषणत्रिशिरादिवधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

छप्पै॥ छबि समुद्र परधाम बिरज निर्गुण गुणरासी। परमातम परब्रह्म अखिल उर अंतरबासी॥ बिधि हरि हर पदवंद्य प्रणत प्रति-पाल कृपालं। रञ्जन सुर मुनि मनुज दनुज कुल काल करालं॥ जय सकल भुवन पालन करण शरणागत संकटकदन। भाग्यवन्त बन्दन करौं रघुबंश बिभूषण सुख सदन॥
दो० खरदूषण त्रिशिरादि को देखी जबै बिनास।
शूर्पणखा तब भागिकै गई रावणा पास॥
सो० मनहुँ मौत बिकराल निश्चर कुल केरी कुमति।
गई भवन दशभाल खर दूषण त्रिशिरादि भखि॥
सभा मध्य परि जाय करि बिलाप बोली तमकि।
तोहिं न सूझत भाय सबलशत्रु शिरपर चढ्यो॥
कुंडलिया॥ भूली सुधि पुर देश की करै पान मदअन्ध। मेरी गति यह ह्वैगई तोहिं जियत दशकन्ध॥ तोहिं जियत दशकन्ध लाजं सब ह्वैगै भङ्गा। निरखसि नैन पसारि भरे शोणित मम अङ्गा॥

अङ्गन भंग निहारि पीर त्वहि तनक न हूली। रढ़त चढ़ी शिर मौत खवरि तोको सब भूली॥ बोल्यो सुनि दशमुख सरुष कहु क्यहि त्रास न मोरि। ज्यहि श्रुति नासा काटि यह कीन्हीं दुर्गति तोरि॥ कीन्हीं दुर्गतितोरि कहै क्यों सपदि न हाला। को अस प्रबल त्रिलोक आयपहुँच्यो क्यहि काला॥ कालहुको डरडारि श्रवण नासा तव छोली। कहु कहु काकेकर्म सुनत शूरपणखा बोली॥ कबित्त॥ आये बनदे वन कुमार कौशलेश द्वैक सुंदर उदार कोटिमारमा लजावना। भाग्यवन्त चारु सुकुमार बीरवाणयत पौरुख प्रतापपुंज पारहै प्रभावना॥ मारे खलवृन्दन अनन्द मुनि छन्द त्रास डारे डर देवन पुकारे यश पावना। काटे श्रुति नाकते सुडाटे खरदूषणादि मारिकै सदल औनिपाटे तिन रावना॥ सवैया॥ ते यक संगलिये नवनारि निहारत जो सचराचर मोहै। रंभ रमा रति भारति गौरि मलीन प्रभाद्युति दामिनि को है॥ कोटिन चंदप्रभा मुखपुंज अनूपम रूप बिरञ्चि रचोहै। क्यों भगवन्त प्रशंसकरौं गुणसागरि रूप उजागरि सो है॥ कबित्त॥ भाईतीय साथमें सुभाईती न साथमें सुभाईती न साथहैं सुगति दीन भाई है। राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाक दिगनाकतौ सुहाई है॥ राखेआपु बैरिन न राखी आपु बैरिनको बानोबान खंडन सुवान हेरिआई है। एरे मन्द रौना तोहिं सूझितौ परौना तिन्हैं जान्यसु नरौना काल तेरेहाल पाई है॥

दो॰ खरदूषण त्रिशिरादिको सुन्यो जबहिं सो घात।
अतिरिस व्यापी दशमुखहिं उठेसकल जरिगात॥

शूरपणखहिं तब बिबिध प्रबोधीं। गयो भवन रावण मनशोधी॥
तीनिलोक सुर नर मुनिमाहीं। मम सेवक सरि दूसर नाहीं॥

मो सम प्रबल सुभट खर दूषण। तिनहिं बधैको बिनु जगभूषण॥
जो अवतरेउ जगतपति आई। तौकरि बैर तरौं भव जाई॥
तामस देह भजन किमि करिहौं। हरिपद बिमुख नरकमहँ परिहौं॥
निज परलोकहिं जो न बनायो। धृग धृग ताहि बृथाजगजायो॥
जो नृप तनय कछू बलभारी। तौ हरिहौं तिय द्वउ रणमारी॥

दो० अस बिचारि मन रावणा चल्यो जहाँ मारीचु।
ज्यों पतंग दिशि दीपकहिं चल्योधाय बशमीचु॥

स्वागता छंन्द॥ राम सीय इतबोलय लीना। राजपुत्रि सुनिये सुप्रबीना॥ मैं सुकीन्ह चहतो नर लीला। भूमिभार हर आनँद शीला॥ सो शुभाग्नि करिये तुम बासा। जावतारि गण होहिं न नासा॥ प्राणनाथ मुखके सुनिबानी। हर्षिसीय तब अग्निसमानी॥ राखि तत्र वैसे निज छाया। जानिजाय नहिं रामकि माया॥

दो० रावण उत मारीचको जाय नवायो भाल।
मनउदास त्यहि देखिकै पूँछेउ कहु निजहाल॥

द्वै तपसी दण्डकबन आये। शूर्पणखाहि कुरूप बनाये॥
खरदूषण त्रिशिरादिक मारे। चौदह सहस न एक उबारे॥
सो तुम करहु सहाय हमारी। कपट कुरंग होहु छलकारी॥
ज्यहिते मैं उन तिय हरिआनौं। तौ तुम्हार बहुबिधि गुणमानौं॥

दो० सुनत बचन मारीच तब कहा सुनहु दशशीश।
तिनहिं न जान्यहु नर निपट भवभंजनजगदीश॥

सवैया॥ राखन गे मुनियज्ञ जबै म्वहिं शायक ते फरको बिन मारयो। आयउँ सो शतयोजन अत्र सुताड़्क मारि सुबाहुहिं जारयो॥ भूप सभा धनु शंभु दल्यो भृगुनायकको जिन गर्व उतारयो। नाश किये खरदूषण जो भगवन्त न मानुष ताहि बिचारयो॥ पूरण

ब्रह्म चराचर जो धृत मानुष देह महारण शूरो । जाहि न पावत पार पुराण बखानत वेदहुको मनमूरो ॥ त्यों भगवन्त सुमानि मयाशिष अंतरते छलता गहि तूरो । जाहु घरै कुल बैरि बिचारि सुतासु वि-रोध परी नहिंपूरो ॥ तोमरछंद ॥ सुनि कोपि रावण नीच । कहबैन डाटि मरीच ॥ म्वहिं देत ज्यों गुरुज्ञान । भट कौन मोहिं समान ॥ नाराचछंद ॥ तबै मरीच हीय मैं बिचार यों दृढ़ायऊ । उभै प्रकार मौतको सुब्योंत चालि आयऊ ॥ इतै जुज्वाब देउँ तौ दशास्य मूढ़ मारि है । उतै श्रिराम बाण छूटि प्राण ना उबारि है ॥ निरै सुहाथ अस्य औसि वैसि जाव धामको । मरौं सुहाथ रामके करौं दशास्य कामको ॥

दो० अस बिचारि मारीच मन सुमिरि राम रघुनाथ ।
परम प्रेम हरषित हृदै चल्यो दशानन साथ ॥
ज्यहि कारण मुनि योगिजन करत अनेक उपाय ।
स्वइ प्रभु आजु बिलोकिहौं इन नैननते जाय ॥
जासु क्रोध निर्वाणप्रद करण अवश बशभक्ति ।
नैन सफल करिहौं निरखि सोई प्रभु सहशक्ति ॥

पंचवटी बैठे रघुबीरा । सीता अनुज सहित मतिधीरा ॥
कहहिं राम कछु कथा पुनीता । सादर सुनहिं लषण अरुसीता ॥
रावण संग लिये मारीचा । ताही बन आवा मतिनीचा ॥
कनक कुरंग जटित मणिनाना । भा मारीच न जाय बखाना ॥
त्यहि थल कपट कुरँग स्वइआवा । देखि सुभग सीता मनभावा ॥
कह प्रभु सों हरषित मृदुबैना । यह मृग नाथ परम छबि ऐना ॥
मिलत गहे जो पालन लायक । मारथहु होइ चर्म सुखदायक ॥
प्रिया बचन सुनि आगम जानी । उठे राम गहि शरधनु पानी ॥

दो॰ लषणहिं सौंपि विदेहजहि आपु शरासन साजि।
मृगपाछे धाये तुरत चल्यउ देखि सो भाजि॥

सवैया॥ सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन पाप सुकीरति छायो। आगम वेद पुराण बखानत नेति न शंकर ध्यानहिं पायो॥ पूरण ब्रह्म जदादि न अंत अनंत सुसंत महातम गायो। सो भगवन्त शरासन साजि कपट्ट कुरंग के संग सिधायो॥

पुनि पुनि चितवत प्रभुचितदीन्हे। मुनि मखके रखवारे चीन्हे॥
कबहुँ जाय दूरि पुनि प्रगटावे। कबहुँ घेर परिकट निकटावे॥
यहिविधि सो जब दूरि सिधारा। तब रघुबीर ताकि शरमारा॥
परेउ धरणि महि धरहि पुकारी। हरुये सुमिरि राम दुखहारी॥
तौ त्यहि दीन राम निजधामा। लै मृगचर्म फिरे अभिरामा॥
तासु शब्द इत सिय सुनिपाई। बोली लक्ष्मण ते दुखराई॥
हे देवर तुम बेगि सिधारो। प्रभुहि परेउ कछु संकट भारो॥
मृग न होइ यह निशिचर कोई। दीन्हेउप्रभुहि बिपिन दुखसोई॥

सो॰ लषण कह्यो सुनु माउ दुख दायक प्रभुको कवन।
सौंपिगये किमि जांउ स्वामि रजायसु भंगकरि॥

सवैया॥ रामहिं जीतनहार न है कउ कालहु आनि जुरै रण जोई। देव अदेव सबै लरि हारहिं पावहिंगे पर पार न सोई॥ राम न आरत बैन कहैं कहु डारिय मातु सु शोचन खोई। त्योंभगवन्त सु मानु प्रतीति न रामहिं संकट दायक कोई॥

तव सिय कही परुष कछु बाणी। उठे लषण गहि शर धनुपाणी॥
चांप कोर ते चहुँ दिशि रेखा। खैंचि सौंपि बनदेवन शेषा॥
जो नँघि. सो दहै तुरंता। चले नायशिर सियहि अनंता॥
रावण सून्न बीच तब पावा। यतीरूप धरि सियढिगआवा॥

याच्यो भीख सुनत बैदेही। लगी देन फल मूल सु तेही॥
बोला पुनि सो कपट प्रवीना। बँधी भीख मैं कतहुँ न लीना॥

दो० भावी वश सिय रेख तजि बाहर निकसी ज्योहिं।
करि प्रणाम बैठारिरथ चल्यउगगनपथ त्योहिं॥
इतउतचितवतत्रकितचित जान्यो।सियदशशीश।
करि पुकार बिलखाइ कह हाइ हाइ जगदीश॥

॥ सवैया ॥ हा सुख भूरि गयो वन दूरि कुरंग के संग अनंग लजावन। लेहु न क्यों सुधि दीनदयाल दिवाकर बंश दिवाकर पावन॥ आरतभंजन नाम प्रसिद्ध सु आरति मोरि हरौ मनभावन। त्यों भगवन्त छुड़ावहु बेगि हरेम्वहिं जात लिये खल रावन॥ हाय सु लच्मण दोष न तंत्र फल पायउँ सो भल रोष जु कीन्ह्यो। सोक्षमि शेष सुधावहु रेख जु नाँघत डारि त्वयाडर दीन्ह्यो॥ ज्यों सुरभीसुर गोमर पानि परी परपानि सुत्यों म्वहिं चीन्ह्यो। छोरहु कै छलछुद्र हमैं हरि रावन देव सतावन लीन्ह्यो॥

दो० सीता केर बिलाप सुनि सचराचर सब जीव।
भये बिकल भूली सबहि तनमन सुधि बुधिहीव॥

छंद हरिपद॥ गृद्धराज रघुराज प्रियाको आरत रव सुनिपायो। राम राम कहि ताहि प्रचारत गगन पंथ धुकिधायो॥ ज्यों छूटे पविशक्र गिरिनपै मारुत बेग लजायो। त्यों करि क्रुद्ध गृद्ध अति आतुर जहँ रावण तहँ आयो॥ कवित्त॥ रे रे दुष्टरावण निलज्ज राजपतिचोर लंपट लवार क्षुद्र राव मद्यखोरमै। बाहुबीश शीशदश ईशके अशीश खीस जैहें बिसौबीश जगदीश कोप घोरमै॥ जाहि ढीलि जानकी सुजानकी कुशल चाहि मान किन मानतजि जानकीश मो रमै। नातो करिहातो बिश्वनातो सब ठाढ़होहिं भागुरे

न भागुहत आयो काल तोरभै॥ चोंचन बिदारि अंग पोचहि प-छारि औनि औनिजै सुराखि थल ताहि फेरि डाय्यऊ। पौरुख प्र-बल पूरि दोहुन बिरचि युद्ध रामके प्रभाव पावँ गृद्धको न हाय्यऊ॥ मारिकै बिकल चोट चंगुलन चूरकरि मुकुट कोदण्ड पाणि आयु-धन छाँट्यऊ। भाग्यवन्त फेरि उठि रावण सक्रुद्धवीर काढ़िकै कृपानपैन पंखतासु काट्यऊ॥ तोटकछन्द॥ कटि पंखगिय्यो खग रुण्डमही। मुखसों करुणानिधि रामकही॥ धनि गृद्धजु रामहि काजलय्यो। नहिं जीवत जानकि त्यागकय्यो॥ मुनि सिद्ध सराहत ध्यानअड़े। भगवन्त जटायुके भागबड़े॥ दोधक छन्द॥ रावणलै सियभाग सभीता। भूरि बिलापकरै नभ सीता॥ पर्वतपै सिय कीशनहेरी। दीनसुडारि पटै हरि टेरी॥

दो० यहिविधि रावण जानकी हरिलैगयो पराय।
विपिन अशोक अशोकतरु तरलै राख्यसिजाय॥

बोला तब सियसों अनुरागी। करहु न शोच नरनके लागी॥
उनमें कछु प्रभाव नाहिं भूरी। मैं समुझत उनको करिधूरी॥
दिहिनि खेदि घरते पितु माता। भरमतफिरत विपिनदुउभ्राता॥
नहिं जानी क्यहि करम प्रभावा। तुमकरि नाह नरनको पावा॥
अब जागयउ तव भाग सुसीता। जो आइउ हमरे सँगप्रीता॥
देखहु मोर प्रभाव अपारा। मोसम प्रबल न कउ संसारा॥
मोरकहा जो करु हितमानी। तौतुव चेरिकरौं सब रानी॥
यहिविधि खलबहुसिखवनदीन्हा। पै सिय कान न सो कछु कीन्हा॥

दो० ज्यों पत्थरमें काँचको खण्ड प्रहारै कोय।
ताहि न व्यापै चोट पुनि चूर आपुही होय॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेआरण्य काण्डेमायासीताहरणवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

दो० जाको नाम सुध्यावतै अशुभौ शुभ सब होत।
भाग्यवन्त स्वइ राम सिय बन्दौं भवनिधि पोत॥

गये लषण जहँ राजिवनैना। अनुजै लखि बोले प्रभुबैना॥
तात बात कीन्हेउ भलिनाहीं। आयहु छोड़ि सीय बनमाहीं॥
परत जानि म्वहिं अशकुनदेखी। काहुहि खल सियहरेउ विशेखी॥
कह्यो लषण कछु मोर न दोषा। पठयो हठि स्वामिनि करि रोषा॥
तब सबन्धु चलि आश्रम आये। शून्यकुटी नहिं सीतहि पाये॥
भये विकल जस पूरुष कामी। नरइव चरित करत जगस्वामी॥
चले सियहि खोजत द्वउबीरा। गिरिसर खग मृग बन द्रुमतीरा॥

इन्द्रवज्रा छन्द॥ हे हे खगाली मृगभृङ्गश्रेनी। देख्यो सु सीता मृगमंजुनैनी॥ हे हे सुसीता मम प्राणप्यारी। गैली कहाँको ह्वय मोहिं न्यारी॥ जौने सनेहै तजि आर्य्यगेहू। आई हमारे सँग तौन नेहू॥ कीन्ह्योकहा सो ज्यहि आजुमोहीं। दीशौ न सीता कृत खोजतोहीं॥ कैसे व्यथा मो सहिजात तोपै। हेहे सुमीता प्रगटौन जोपै॥ मैंतो सुकीन्ह्यो कहने तुम्हारे। गौन्यो तुरन्तै मृगहेम मारे॥ काहे सुप्यारी अब कोहकीन्ह्यो। जो बीच बनमें तजि मोहिंदीन्ह्यो॥ ऐसेहि श्रीराम विलापकरते। आयो जहाँ गृद्धपरा कहरते॥ शोचै सकोचै मन दुःखदाग्यो। मेरे न एकौ कछु हाथलाग्यो॥ हरिगीतिका छन्द॥ लाग्यो न मेरेहाथ एकहु बीति बपु बादिहिं गयो। जिमि कल्पबेलि सुजन्मि कानन उपजि दवँ दाहत भयो॥ बरबस निशाचरनाथलैगो हठि न सीतहिं राख्यऊ। देख्यउ न भरतहु राम छवि सियसुधि न प्रभुसन भाख्यऊ॥ योहीं जटायू कर मींजि शोचै। मोसों अभागी भव कौन पोचै॥ ताही समै सो द्वउबंधु आये। देखे सु गीधै जल नैन छाये॥ छाये बिलोचन बारि गीधहिं गोदकरि

राघवं लिये। अति प्रेम सींचे सलिल अश्रुन मनहुँ जल आधो दिये॥ हे लषण गीधहिं मिलत बनमें मरण पितु नहिं जान्यऊ। सहि सक्यउ सो बिधि कठिन नहिं बड़पक्ष आजु सु मान्यऊ ॥ बोल्यो जटायू तब धीर धारी। कीन्हीं दशास्या गति या हमारी ॥ सी तैं सु लैंगो दिशि दक्षिणै को। राख्यों सु प्राणै तव दर्शनै को॥ छंद॥ तव दरश लागि सु प्राण राख्यों चलन अब चाहत सही। कह राम राखहु तात तनु अतिधीर मन डोल्यो नही॥ अवलोकि प्रभु मुख चंद्रछबि वर बचन गीध सुनाइहौ। यहि झूंठ जीवन लागि रघुपति समय धोख न लाइहौं॥ दुर्घट्ट जाको है नाम अंतै। पैहौं कहां फेरि सुभागवंतै॥ जानौ सुभावै प्रभु आपु नीके। पालौ नतै मेटि विकारही के॥ हियके विकारन मेटि रघुपति प्रणत प्रतिपालय लियो। शुभकर्म हीन मलीन म्वहिं पितु आपने पटतर दियो॥ जो त्रिजग योनि कुजाति गृद्ध सु खाय परआमिष जियो। भगवन्त आज समाज सुकृतिन मोहिं सब ऊपर कियो॥ बाणी सुकानै मुख नाम रूरो। रूपै सु चाखौं चख मोद पूरो॥ मोसों सुभागी जग कौन जायो। ज़ाको सुअंकै निज रामलायो॥ लाये सुअंकहि कहत रघुपति तात कछु दिन जीजिये। अवलोकि सेवा सुवन मोकहँ तात को सुख दीजिये॥ रहि दिव्य देह सुइच्छया जग मरण जीवन लीजिये। दै दरश हरि हर सुयश गाय कृतार्थ सबको कीजिये॥ श्री रामबाणी सुनि आस्यहेरी। बोल्यो जटायू मृदुबैन फेरी॥ मेरे सुमर्बै सम फल्लचारी। हांबै जु राघो कहियो बिचारी॥

दो० सुनि प्रभु बचन जटायुके मौन न उत्तर दीन।
भाग्यवंत रघुबीर सम को कृपालु परबीन॥

पुनि कृपालु बोले मृदुबानी। तात सकल तुम सुकृत कि खानी॥

परहित चहेउ तात तुम तासू। पायउ फल मुनि दुर्लभ आसू॥
जाहु धाम मम त्यागि शरीरा। देउँ कहा तुम्हरे सब तीरा॥
सीता हरण पितासिन जाई। कहेउ न तात सुनत दुख पाई॥
राउर पुण्य प्रताप सुआगी। दहिहौं शत्रु बिलम्ब न लागी॥
कुल समेत सुर सभा हवाला। कही आइ आपै दशभाला॥
सुनि प्रभु बचन गीध हरपाना। ह्वैके तुरत रूप भगवाना॥
करि करपुट अस्तुति अनुसारी। जै जै जै रघुवंश खरारी॥

त्रोटकछंद॥ जय राम कृपा सुख धामहरे। परमातम पूरण ब्रह्म परे॥ नवनीरद गात प्रकाशमई। प्रति अंग प्रभा बहु कामछई॥ अरुणाम्बुज लोचन चारुमुखं। अवलोकनि हारण दासदुखं॥ भुजदंड प्रलम्ब प्रचण्ड नितं। करशायक चापधरं अजितं॥ ज्यहि पावत पार न वेद बकैं। गुण गावत शारद शेष थकैं॥ ज्यहि आदिहु अंत सुमध्य नही। सम दृष्टि चराचर व्याप्त मही॥ भव भञ्जन रञ्जन दिव्य निते। प्रणतारति मोचन भक्त हिते॥ करुणाकरि सो चितते न खसौ। भगवन्त हृदय प्रभु नित्त बसौ॥ गीतिका छंद॥ यहि भांति अस्तुति गीध करि हरिभक्ति अबिरल पायकै। हरिधाम गो अभिराम हर्षित राम पद शिर नायकै॥ रघुवीर तासु क्रियापु कर पितु सरिस कीन बनायकै। भगवन्त ऐसे प्रभुहिं काहेन भजसि मनचित्त लायकै॥

गृद्ध क्रिया करि पुनि द्वउ भाई। चले सियहि खोजत सब ठांई॥
मिलेउ कबंध असुर तहँ रहेऊ। द्वउजन खैंचि खान जब चहेऊ॥
तब रघुवीर कीन त्यहि घाता। कहेसिसकलनिजशापकिबाता॥
मैं प्रभु पूरुव को गन्धर्वा। विद्या रूप रहौं अति गर्वा॥
दुर्बासा की हांसी कीन्हा। तिनतबकोपिशापम्वहिंदीन्हा॥

होसि जाय राक्षस कुरूपा। तब उद्धार हाथ सुरभूपा॥
भयउँ असुर अति करौं उपद्रै। मारेउ इन्द्र कोपि तब बज्रै॥
गयउ शीश तब पेट समाई। व्याकुल गिरेउँ धरणिपर आई॥
पुनि वश दयाकीन सुरनाहैं। योजन भरि मम लम्बी बाहैं॥
बाहँन बीच परै जो आई। खाउँ ताहि नहिं आन उपाई॥
यहिविधि कहिनिज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई॥
पुनि प्रभु चले अनुजयुत आगे। शवरी कै सुधि करि अनुरागे॥
ज्यहि त्यहि पूँछत राजिवनैना। क्यहिबन बसत शवरिसुखऐना॥
जासु भक्ति सुनि श्रवण बिशेखी। कल न परत म्वहिंकबधौं देखी॥

॥ दो० यहां प्रात शवरी उठी फरके शुभ सब अंग।
॥ सगुन सुहावन देखि मन परमानंद उमंग॥
॥ करत मनोरथ विविध विध पुलक प्रफुल्लित गात।
॥ आजु हमारे आइहैं राम लषण द्वउ भ्रात॥

॥ कवित्त॥ ऐहैं घर मेरे आजु पाहुने लषण राम प्राणनि अधार सो निहारि सुक्ख पाइहौं। पूजित अजादि सुर शङ्कर सरोज पायँ प्रेमसों पखारि पूजि हीय सों लगाइहौं॥ जासु छवि देखिवेभिलाषन मरत देव सोई छवि आजु इन नैनन बसाइहौं। भाग्यवन्त पाय कै गरीबको निवाजिबान रामसों सुभाय सब लाहुने अघाइहौं॥ झारि तृण झोपड़ै सुवारि भरि कुंभधारि दोनन सँवारि भरि धरे फल आनिकै। खन भौनजावै खन द्वारको सिधावै खनखन झाँकि आवै पंथ भूपर सुपानिकै॥ खन अनुरागै तनमन प्रेम पागै खन चूनन सुलागै फल फूलन सुजानिकै। भाग्यवन्त राघव सबंधु आपु गये आय शावरीके भौन प्रेम प्रण पहिचानिकै॥ शावरी बिलोकि छबि साँवरी मगन प्रेम धायकै सरोज पायँ जाय भई लागती।

प्रेमपट पाँवड़े अरघ देत आँसुनै सु आश्रमै ल्यवायलाय मोदपुंज पागती ॥ धोयकै चरण चारु आसनै पधारि दिव्य दोनन सुआनि फल दीन्हे अनुरागती। भाग्यवन्त सानुजै श्रिराम सो सराहि खात शावरी कि भागिको न भागि जगजागती ॥

॥ दो० जो प्रभु पूरण ब्रह्मपर शिवको अगम लखात।
स्वइप्रभु शवरीसों मुदित माँगि माँगि फलखात ॥
धन्य धन्य भगवन्त जग शवरी को बड़भाग।
ऋषि आश्रमन विहाय ज्यहि खाये प्रभुफलशाग ॥

करि फल अशन अँचे रघुवीरा। उठे हरषि भंजन भवभीरा ॥
तव करजोरि शवरि मृदुवानी। बोली सुनहुँ राम सुखदानी ॥
मैं योपित शुभ कर्मन हीना। पापपरायन कुटिल मलीना ॥
प्रभु करि कृपा लीन अपनाई। करौं कवनविधि विनय बड़ाई ॥
कह रघुपति भामिनि जगमाहीं। तो कहँ कछु दुर्लभ है नाहीं ॥
भक्तिमोरि तैं हृदय दृढ़ाई। ताते मुनि दुर्लभगति पाई ॥

॥ दो० अबकहु सीतासुधि सुखद जो पाये कहुँहोय।
पंपासर प्रभुजाउ तहँ कहिहि सुगर सुधिजोय ॥
असकहि प्रभुपद पद्मकरि वारहिंवार प्रणाम।
योगअग्नि तनु त्यागिकै गई रामके धाम ॥
निजकर प्रभु ताकी क्रिया कीन्हीं मातु समान।
भाग्यवन्तअसस्वामितजि कहहुभजैक्यहिआन ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डेजटायुउद्धरणशवरीकथावर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६॥

कुण्डलिया॥ पूरण ब्रह्मप्रकाशमय निराकार निरखेद। अज अलेख अविकार ज्यहि पार न पावत वेद॥ पारनपावत वेद श्रमित

सहसानन गाई। करुणासिन्धु कृपाल स्वई भक्तनहित आई॥ आइ धस्यो नरदेह दलन भवभय दलकूरन। भाग्यवन्त प्रणमामि राम रघुपति प्रणपूरन॥

दो॰ शवरिहिं सुथल पठाइके राम लषण द्वउबन्धु।
चले बहुरि खोजत सियहि नरकेहरि बलसिन्धु॥
दुख सुखरहित सु एकरस गुणसागर सुखधाम।
बिरहीइव बिलपत विकल गये पंपसर राम॥
सन्तहृदय निर्मल यथा पूरण जल त्यहि माहिं।
बांधेघाट सुचारि वर कहत बनै छवि नाहिं॥

हरिपद छन्द॥ फूलेताल कमल बहुभाँतिन भ्रमरमाल गुंजारैं। बोलत चक्रवाक खग संकुल सुनत ध्यान मुनिटारैं॥ चारिहुदिशि वनबाग सुहावन मनभावन तरुफूले। डोलत त्रिविध वायु सुखदायक बोलत खग अनुकूले॥ मुनिगण विपुल कुटी तहँ छाये बसहिं सदा अनुरागे। देखि राम सुखधाम सरोवर सहित अनुज सुखपागे॥

दो॰ करि मज्जन सज्जन सुखद तरुछाया भलिदेखि।
अनुजसहित बैठे तहाँ राम कृपाल विशेखि॥
सुरमुनि सकल सुपाय सुधि आये जहँ रघुराय।
नानाविधि करि करि विनय गये भवन शिरनाय॥
नारदमुनि ताही समय करत रामगुण गान।
प्रेममगन आये तहाँ राजत जहँ भगवान॥

करत प्रणाम राम उर लाये। पूंछि कुशल आसन बैठाये॥ बहुबिधिमुनिहि विनयप्रभुकीन्हा। तब नारद अस बोलय लीन्हा॥ सवैया॥ कोशलराज कुमार उदार अपार सदा यशवेद पुकारे।

दीनदयाल शिरोमणिस्वामि प्रसिद्ध सदा जनके हितकारे॥ देहु यहैवर मांगतहौं रघुवीर सर्वगति जाननहारे। रामवड़ो सब नामनमें भगवंत बसौउर नित्तहमारे॥

सुनि मुनि वचन राम सुखपाये। एवमस्तु कहि हृदय लगाये॥ पुनि करजोरि मधुर मृदुबानी। बोले मुनि प्रसन्न प्रभु जानी॥

सवैया॥ प्रेरयउराम जवै निज मायहि मोह्यउ मोहिं तबै जगतारन। चाह्यउँ मैं सुविवाह करै प्रभु दीन करे नहिं सो क्यहिकारन॥ सो प्रभु भेद बुझायकहौ ज्यहि होय हृदै मम खेद निवारन। राजिवलोचन राम तुम्हैं बिन देखिय और न दास सँभारन॥ रोलाछंद॥ मुनिबोले रघुनाथ नाथ जेभक्त हमारे। भजहिं मोहिं वसुयाम काम तजि प्राण पियारे॥ करौं सदा तेहित्रातु यथा बालक महतारी। लेत अनल अहिगहत शिशुहिं लखिधाय निवारी॥ प्रौढ़ भयेसोइ बाल प्रिया मातहिं बरुआछे। पै नहिं तैसी बात रही जैसी कछुपाछे॥ तिमि प्रियज्ञानी भक्त मोहिं शिशु प्रौढ़समाना। दासअमानी प्रीव यथा बालक अनजाना॥ ज्ञानिहि निजबल रहत अमानिहि केवल मेरा। काम क्रोध रिपु प्रबल दुहुन पै करतदरेरा॥

दो० अस बिचारि जे विदुषवर भजहिं मोहिं निजशक्ति।
पायहु ज्ञान सुजानपर तजत न मेरी भक्ति॥

सो० काम क्रोध मद लोभ प्रबल मोह सेना सकल।
माया मै तिय शोभ तिनमहँ अति दारुण दुखद॥

सवैया॥ श्रीमुनिराज पुराणकहैं श्रुतिसंतनको सतमत्त यहीहै। मोहमई घन काननको सुत्रदायकनारि बसंत सही है॥ त्यों भगवंत जपादिक नेम जलाश्रय पूरण पुंज मही है। ताहि विशोषत नारि सु है ऋतु ग्रीषम रावत नाम नहीं है॥ कामरु क्रोध मदा-

दिक मत्सर भेकनको मुद संकुलदाई। है बरषाऋतु नारिसही दुर-
वासनकूमुद को समुदाई॥ दायकहै मुदशार्द यथा सरसीरुह वृन्द
सुधर्म्म सुहाई। देति तिन्हैं दुखदारुण त्यों प्रमदाहिमि ह्वै मति-
मन्द सदाई॥

दो० नारि शिशिरऋतु पाइकै पलुहै ममतु जवास।
कलुष उलूकन को सदा निशिसम देत सुपास॥
बुधि विवेक बलशीलझख लहि सनेह जलमाहिं।
बनशीसम बेधत तुरत नारि कहत बुध आहिं॥

सवैया॥ औगुणमूल सदै प्रतिशूल करै प्रतिकूल सुधर्म्म न
चीन्ह्यो। नारिसनेह महा बनमें परि भूलि सुपंथनके दुख लीन्ह्यो॥
त्यों भगवंत कहै सद्ग्रन्थ कलंकन नारि मतो क्यहि दीन्ह्यो। सोइ
मुनिराज बिचारि तुम्हैं विष पीवत देखि निवारण कीन्ह्यो॥

दो० रामचन्द्रके बचन सुनि मुनि नारद सुख पाय।
ब्रह्म भवन गवने मुदित बार बार शिर नाय॥
रामसरिस तिहुंलोकमें को कृपालु निरहेतु।
ताते सब छल छांड़िकै भजहु रामकरि चेतु॥

कुंडलिया॥ नाहीं ह्वै करार कछु या तनको क्षणएक। ताते
भल सियरामको भजिले सहित बिबेक॥ भजिले सहित विवेक
गये समया नहिं पैहै। चौरासी दुखदेखि हाथ मलिमलि पछितैहै॥
पछितैहै बहुभांति समुझु अबहीं मनमाहीं। भाग्यवंत बिनुराम हितू
आपन कोउ नाहीं॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्सोत्मजसगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्य
काण्डे पंचवटश्रीरघुनंदननारदसमागमवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥
इति आरण्यकाण्डसमाप्तम्॥



# भक्तिशिरोमणि किष्किन्धाकाण्ड।

॥ दोहा ॥

गुरु गणेश गिरिजा हरहि सुमिरि राम सिय ध्याय।
किष्किंधा शुभ काण्ड अब कहौं सकल सुखदाय॥

सवैया ॥ सत्य सुशील दया गुण सागर आगर नीति प्रणै प्रति पालक। रञ्जन साधु महीसुर सज्जन भञ्जन बैरिन दुष्टन घालक॥ भक्त शिरोमणि वीर बली शरणागत पाल सदै दुखदालक। ध्यावतहैं भगवन्त तुम्हें जन जानि द्रवो सुसमीर के बालक॥

दो० नारद मुनि हरिभक्ति जब पाइ गये पितु धाम।
तब सानुज आगे बहुरि चले विपिन श्रीराम॥
ऋष्यमूक पर्वत निकट जब दरशे द्वउ भाय।
लखि सुग्रीव सभीत ह्वै कह हनुमन्त बुलाय॥
अति सुन्दर द्वै पुरुष ये रूप शील बल गेहु।
आवत सो धरि बटु बपुष जाइ मर्म तुम लेहु॥

सो० सुनि सुकण्ठ के बैन पवन तनय धरि विप्र तनु।
जाय निकट छबि ऐन माथ नाय बोले बचन॥

॥ सवैया ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल कोमलगात सुभाय सुहाये। बीर सुधीर लजावन मैन सुबैन सुक्षत्रिय रूप बनाये ॥ कारण कौन फिरौ बनमें हिमि मारुत घाम रहे तन ताये। सो भगवंत कहौ प्रभु आपु कहां त्यनि आवत कौनके जाये ॥ श्रीदशरत्थ के पुत्र उभै हम राम सुलच्मण नाम हमारो। आयसु तात चले बन को सँग सुन्दरि नारि रही मनहारो॥ सो हरि निशिचर लीन यहां हम खोजत ताहिन शोध न पारो। विप्र कहौ अब रावरे कौन हौ काज कहा बन मांझ तुम्हारो ॥

दो० सुनि प्रभु बचन बिचारि निज बालपनाके नाथ।
परेउ चरण अति प्रेमबश पवनतनय धरि माथ॥
तब रघुबीर उठाय कै लाये हृदय सप्रीत।
परम प्रेम पेपे कपिहि कहि मृदु बचन बिनीत॥

कवित्त ॥ नाथ कीशनाथ यहि शैलपै करत बास रावरो सो दास ताहि गति है न आनकी। बन्धु त्रास व्याकुल कृपाल कैसु प्रीति ताहि कीजिये निव्राज लाज राखिये सुबानकी ॥ भाग्यवन्त पायकै सुसिद्धि काज वानरेश आपहू सुसाधि काज मानिये प्रमानकी। बोलि कीश संकुल पठाय देश देशनै सुदेइगो मिलाय खोज रावरेहि जानकी ॥

दो० यों कहि सादर बन्धु द्वउ लीन्हें पीठि चढ़ाय।
लाये जहँ सुग्रीव लखि परे चरण तल धाय॥
सूर सुवन दशरथ सुवन जातवेद दै बीच।
पावन परम सुहावनी कीन्ही प्रीति अबीच॥

तब सौमित्र कही सब बाता। ज्यहिबिधिबनाहिंचलेजनत्राता॥
सियगति सुनि भूषण पटआनी। दीन प्रभुहिं सुग्रीव सुजानी॥

हृदयलाय अति शोचहिकीन्हा। कहिसुकंठ बहु धीरज दीन्हा॥
नाथ करहु जनि शोचहि भारी। मिलिहैं तुमहिं विदेह कुमारी॥
दो० सखा तिहारे बचन सुनि भयो शोच मम नास।
कहु कारण अब आपनो क्यों कृत बन में बास॥
मैं अरु बालि नाथ द्वउ भाई। भै उत्पति जिमि कहौं सुनाई॥
ब्रह्मा आँसु बुंद ते जायो। रिच्छर्जा कपि एक कहायो॥
मज्जत सो सर एक मँझारी। हैगो तुरत दिव्य तनु नारी॥
देखि इन्द्र मोहित मन हरेऊ। खस्यो बीज कच ऊपर परेऊ॥
त्यहि ते भयो बालि कपि बीरा। मम उत्पति सुनिये रघुबीरा॥
रविकर बीज खस्यो त्यहि ग्रीवा। ताते मैं प्रगट्यों सुग्रीवा॥
रिच्छर्जा पुनि वैसहि भयऊ। बानररूप प्रथम जिमि रहेऊ॥
तब ताको विरश्चि सुत जानी। किष्किन्धा दीन्हीं रजधानी॥
दुन्दुभि और मयावी नामा। मय सुत असुर रहे बलधामा॥
प्रथमहिं बालि दुन्दुभी मारा। मायावी स्वइ बैर सँभारा॥
अर्धराति पुर आइ हमारे। बालिहि युद्ध हेत ललकारे॥
धायो बालि महूँ सँग धारा। भागि पैठ गिरि गुहा मँझारा॥
म्वहिंबदि बालि अवधि पखवारा। मासदिवसलागि किहेउँनिहारा॥
निकस्यो रुधिरमृतक त्यहिजानी। आयों भवन भीति मन मानी॥
मंत्रिन्ह पुर भूपति बिनु चीन्हा। बरबस राजतिलकम्वहिंदीन्हा॥
दो० ताहिनिधन करि बालिपुनि आयोमोहिं बिलोकि।
धाम बामधन छीनि म्वहिं खेदेउ बहुविधि ठोंकि॥
ताके डर रघुबंश मणि फिरेउँ बिकल सब ठाँय।
ऋषि मतंगकी शाप बश इहाँ न सोसक आय॥
॥ भुजंगप्रयातछन्द॥ जबै दुन्दुभी शत्रुको बालि मार्यो। दियो

फेंकि लै वाहिं सो अत्र पाख्यो ॥ चपै देखिके कोपि यों शाप दीन्ह्यों। हुवै भस्म आवै इहाँ जौन कीन्ह्यो ॥ सवैया ॥ सुनि सेवक को दुख दीनदयाल सभीतन पाल कृपाल सही। फरके भुजदण्ड प्रचण्ड उभै अवलोकि सुकण्ठहि कोपि कही ॥ मरिहौं शर एकहि वालि बली बिन औगुण जो उर तोर दही। बचिहैं नहिं प्राण सु सत्य कहौं शरणागत जो विधि शम्भु गही ॥ कबित्त ॥ होय दुख दुखित सुमित्र दुख देखि जोन पातक बिलोकि ताहि दृग न निहारिये। आपं दुख मेरुको समान रज लेखियत मित्र दुख रजको सुमेरु ज्यों सिहारिये ॥ काय मन वचन प्रतीति प्रीति मित्र मैंन जानिये कुमित्र ताहि दुखदै विचारिये। भाग्यवंत जाके मनसाँचो न सनेह तौन मित्रन किमित्रता में मित्र खाक डारिये ॥ भाषै सत्यसार को न राखै छल चित्तलेश औगुण दुरायगुण मित्रहि प्रचारिये। देवत निशङ्क ह्वय लेवत सु वस्तु ताहि जेंवत जेंवाय गुह्य वक्रि प्रश्न कारिये ॥ आपद के काल करैं सौगुन सनेह जाल बलमें सदैव तासु हितही विचारिये। भाग्यवन्त भाषत पुराण वेद ग्रन्थमाल ऐसे शुचि मित्रन पै प्राण वारि डारिये ॥

दो० सेवक शठ भूपति कृपण कपटी मित्र कुनारि।
दुख दायक नित जानिये शूल सरिस ये चारि ॥
सखा हमारो पाय बल त्यागो शोच समाज।
सब प्रकार मैं काल्हिही करिहौं तेरो काज ॥

सवैया ॥ बालि महाबल शालि अहै त्यहि मारनहार न दूसर कोई। दुन्दुभि अस्थि समूह ढहै शर एकहि बेधय तालय जोई ॥ त्यों भगवन्त सु बात यहू बलअर्द्ध लहै रिपु सन्मुख होई। राघवजी इतिं काजसरै बर बालिहि मारिसकै भट सोई ॥ गीतिका छन्द ॥

जब बालि मार्यो दुन्दुभी सुनि शक्रमन मुद मानिकै। फल ताल पठये सात नारद हाथ दीन्हे आनिकै॥ इन खात ह्वैहै अजर अमरहु बालि मन सुख छायऊ। धरि न्हान लाग्यो उरग यक तहँ आइ सा-तहु खायऊ॥ लखि बालि कह तरुताल जामहिं सात तव तनु फारिहै। सुनि भुजग बोल्यो तोहिं मारिहि मोहिं जौन उबारिहै॥

दो० सर्पाकृत रघुबंशमणि सप्तताल स्वइ जान।
को अस सुभट त्रिलोक महँ बेधिसकै यक बान॥
कह प्रभु मोहिं देखाइयो कहाँ हवैं सो तार।
बेधौं एकहि बाणही नेकु न लावों बार॥

त्रोटक छंद॥ रघुबीर जबै यह बात कही। शुभ ग्रीव भयो लय जात तही॥ दशधूह जु दुन्दुभि अस्थि रहे। पद अंगुठ बाम श्रि-रामढहे॥ दश योजन पै स्वइ जायगिरे। शर एकहि तालन बेधि फिरे॥ गत शाप भुजंग प्रमोद भरे। गवन्यो कहि जै रघुबीर हरे॥

दो० जो निज माया प्रबल करि बेधे सब जग गात।
सात ताल बेधन कहा ताको है बड़ि बात॥

सवैया॥ राम प्रभाव बिलोकि महा मनमोद भयो शुभ कंठहि भारी। भै परतीत सु बालि बंधे हित दूरिगई दुचिता चितसारी॥ बारहि बार गहे पदपंकज पूरण प्रेम बिलोचन बारी। नाथ अडोल भयों अब मैं भगवन्त कृपा रघुनन्द तुम्हारी॥ संपति पुंज प्रिया परिवार पसार जितो जग कारण मोहे। शत्रु न मित्र दुखौ सुखहू सब स्वारथ ना परमारथ कोहे॥ ये सब रामहिं भक्तिके बाधक हित्त न आपनके जग जोहे। त्योंभगवन्त बिहाय सबै यक राखिहौं नेह सुरावरे सोहे॥

सो० बालि परम हित मोर ज्यहि प्रसाद भंजन बिपति।

कोशल राजकिशोर मिल्योमोहिं करुणा भवन ॥
दो० सखा कह्यो सो सत्य सब पैवच मृषा न माम।
गिरिजा नटमरकट सरिस सबहि नचावत राम ॥
भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ तबै बोलि श्रीराम सुग्रीवसाथै। चलेसाजि शारंग नाराच हाथै ॥ पठायो सुकंठै पुकारयो सो बाली । सुसुन्तै चल्यो कोपिकै वीरहाली ॥ परीपायँ तौ बालिके नारि तारा। मिल्योजाय सुग्रीव रामै उदारा ॥ तिन्हैं बैरकै नाथ ना पार पैहो। रहो मानि क्योंजाय प्राणैगँवैहो ॥ कह्यो बालि है लाभ दूनों प्रकारै। प्रिया शोच ऐसे समय तू न धारै ॥ छन्द नाराच ॥ चल्यो सवेग भाखियों विलोकि भानुजातही। भिरे उभै सक्रुद्ध बालि मारि मुष्टि भ्रातही ॥ कियो विहाल भूरिसो सुकंठ हारि भाग्यऊ। प्रहार मुष्टि बालिको समान बज्रलाग्यऊ ॥ कह्यों कृपालु मैं जु बालि बन्धुमोन आरि है। स्वरूप एक बन्धु द्वौ सुभेद हौं न मारि है ॥ कृपासु दृष्टि हेरि फेरि पाणिमेलि मालही। पठाइयो बहोरि दैबलै विशाल जालही ॥ लग्योसुहोन युद्ध क्रुद्ध बीर दोय भावते। श्रिरामओट वृक्ष हेरि चोट क्यों बचावते ॥ जबै श्रिराम जानि यों सुकंठ हीय हारयऊ। द्रुमाड़ बाणताकि बालि हीयमांझ मारयऊ ॥ परयो बिकल्ल बीरभूमि भूमि खाय घावही। उठ्यो बहोरि ठाढ़ अग्र देखि राम चावही ॥ श्रिरामश्याम रूपको सुधारिहीय फेरिकै। कह्यो कठोर बैन बालि राम ओर हेरिकै ॥ सवैया ॥ रामप्रभाव अपार सुन्यो तव देख्यों कर्म्म किरातन केरो। व्यापक ब्रह्म चराचर में समदृष्टि सदा सब काहुहि हेरो ॥ है नहिं अप्रिय कोउ तुम्हें रस एक सदा श्रुतिसन्त निबेरो। सो भगवंत कहो प्रभु क्यों हित मानि सुकंठ कियो बधमेरो ॥ हैंहम निर्बल केर सदाहित माननिको गहि मान बिदारी। तें अभिमान

भरोकपिकुंजर नारि सिखावन कान न धारी॥ बन्धुबधू प्रियनारि किये शठ कौनहै पातकि तोसम भारी। त्यों भगवंत विचारु भले शरणागत पाल है बानि हमारी॥ त्रोटकछंद॥ अजहूं प्रभुमें युत पापसही। गति अन्तसमय ज्यहि आपरही॥ कहि नामयदा भव पार लहैं। अवलोकत सो किमि पापरहैं॥ बंधुछन्द॥ राम कह्यो तब राखहु प्राना। बोलेउ बालि सुनोभगवाना॥ जाहित यत्नकरें मुनि नाना। सेवत जीव लहैं निरवाना॥ दीनदयाल कृपा सुख राशी। पूरणब्रह्म अजय अविनाशी॥ सो रघुबीर खड़ो मम आगे। राखउँ प्राण कहा सुख लागे॥

दो० को अस मूरुख मंदमति कहियो राम सुजान।
जो शठ सुरतरु काटिकै रूंधै बबुर अजान॥

सवैया॥ नाथ मैं मांगतहौं करजोरि कृपाकरि एक यहै बरदेहू। जन्म जहां जेहि योनि विषे वश कर्म लहौं गुरु नीचन गेहू॥ और न है अभिलाष कछू भगवंत तहां तहँ चाहत येहू। राघवजी तव पंकजपायँन सेव बढ़ै नव नित्त सनेहू॥

दो० अंगद मेरो पुत्र यह है मोसम बलवान।
ताहि आपनो दास प्रभु कीजै कृपानिधान॥
अस कहि रामहिं राखिउर बालि गयो हरिधाम।
गिरिजा श्रीरघुबीर सो को कृपाल बिनु काम॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेकिष्किंधाकाण्डेश्रीरामचन्द्रसुग्रीवमित्रताबालिवधवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० रामचरण आश्रित करण संसृत सागर पार।
भाग्यवंत बंदौं चरण पुनि पुनि पवन कुमार॥

बरवै छंद॥ बालि मरण सुनि ब्याकुल सब पुरलोग। धाये तहँ

लखि तारा उर अति शोग ॥ बहुविधि रोवत जोवत मुख भरतार। छूटे केश न रहितन बसन सँभार ॥ सवैया ॥ मैं सिख देत रहिउँ गृह भूरि कहा बश काल न सो श्रुति आन्यो। पूरणब्रह्म चराचर नाथ तिन्हैं वश मान ह्वै मानव मान्यो॥ त्यागि सबै बुधि चातुरता धुकि धाय सु बैरहि राम सों ठान्यो। पायो कियो फल आपन कंत भयो अब अंत अनंतहि जान्यो ॥ लीला छंद ॥ ताराको बिकल जानि। बोले प्रभु कमलपानि ॥ कवित्त ॥ बायू व्योम पावक स-क्षोणि वारिपञ्च ये सुतत्त्व मैं शरीर जो प्रगट ताहि जोवती। जीव जो सुनित्य भृत्य ईशको न नाश तासु आसुकै बिचार जागु राग रैनि सोवती ॥ मीलनं बियोग दुःख सुख सो समान जानि मोहही बिहाय क्यों न मैल भ्रम धोवती। भाग्यवंत आनुही सुज्ञान त्यागि शोच पोच बस्तुही अनित्य लागि बादि क्यों तु रोवती ॥ पद्धरी छंद ॥ सुनि राम बैन बर मारतंड। गयो तिमिर ज्ञान प्रगट्यो अखं-ड ॥ कीन्ही प्रणाम पद पद्म लागि। लीन्ही सुभक्ति बर परम मांगि ॥ तब सुकण्ठ प्रभु कहे सप्रीती। मृतक कर्म कीन्हें जसि रीती ॥ राम कह्यो अनुजहिं पुर जाई। सुग्रीवहिं नृप करौ बजाई ॥ तुरतहिं लषण चले पुर आये। नगर लोग द्विज वृन्द बुलाये ॥ सुगरहिं दीन राज सजि साजू। बालि तनय कीन्हें युवराजू ॥

सवैया ॥ राम गरीब निवाज सदै शरणागत पालक पुंज प्रभा-ऊ। जो बिन काज द्रवैं जनपै बिरदावलि वेद पुराणन गाऊ॥ त्यों भगवन्त सनेह लिये जग को न सराहत शील सुभाऊ। राम सो कौन कृपाल बियो जिन कीन सुकण्ठहिं रङ्क ते राऊ ॥

पुनि सुकंठ सँग लिये अनन्ता। आये जहँ राजत भगवन्ता ॥ सुग्रीवहिं प्रभु निकट बुलाई। राजनीति बहु भांति सिखाई ॥